



आरोहण

वर्ष : 2016-17



कांकरीया झील

कांकरीया झील गुजरात की सबसे बड़ी झील है। इसकी परिधि करीब 2.25 किलोमीटर की है। कांकरीया झील अहमदाबाद के दक्षिण में स्थित मणिनगर उपनगरीय इलाके में है। कांकरीया झील का निर्माण सुल्तान अहमद शाह ने करवाया था। झील के मध्य में नगीना वाड़ी नामक उपवन है। कांकरीया झील भारत के गुजरात राज्य के अहमदाबाद शहर में स्थित सबसे बड़ी झील है। कांकरीया झील को 'कुतुब हौज' और 'हौज-ए-कुतुब' के नाम से भी जाना जाता था।

सुल्तान कुतुबुद्दीन ने कांकरीया झील का निर्माण 15 वीं शताब्दी में शुरू किया और 1451 ईस्वी में स्थापित हुई। लगभग ढाई कि.मी. परिधि में फैली इस झील के मध्य नगीनावாड़ी महल स्थित है जो बहुत ही सुंदर द्वीप महल है। यहां मुगल काल के दौरान नूरजहां और जहांगीर अक्सर घूमने आया करते थे।

कांकरीया झील पर्यटकों के बीच में बहुत प्रसिद्ध है और यहां नौका विहार का भी उत्तम प्रबंध है। कांकरीया झील के चारों ओर बहुत ही खूबसूरत बगीचे हैं और इसी झील के निकट बाल वाटिका, चिडियाघर आदि स्थित है। शाही बाग महल, शाह आलम का रोजा, केलिको टेक्सटाईल संग्रहालय, श्रेयांस लोक-कला संग्रहालय आदि शहर के अन्य प्रमुख पर्यटन आकर्षण हैं।

आरोहण

वर्ष : 2016-2017

संयुक्त प्रकाशन

कार्यालय महालेखाकार

(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखा परीक्षा)

गुजरात, अहमदाबाद

और

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय)

गुजरात, अहमदाबाद

आरोहण

- प्रकाशक : कार्यालय महालेखाकार
(आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा)
गुजरात, अहमदाबाद
और
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात,
अहमदाबाद की संयुक्त राजभाषा कार्यान्वयन समिति
- मूल्य : राजभाषा के प्रति निष्ठा
- मुद्रक : महावीर फोर्म एन्ड रजिस्टर,
अहमदाबाद

इस अंक में प्रस्तुत रचनाकारों के विचार स्वतंत्र हैं और उनकी रचनाओं की प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष जिम्मेदारी स्वयं रचनाकारों की है। पत्रिका परिवार का रचनाकारों के विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी वाद-विवाद का न्यायिक क्षेत्र अहमदाबाद, गुजरात होगा।

आरोहण

वर्ष : 2016-2017

संरक्षक

: श्री गुरवीन सिद्धु
महालेखाकार महोदया

श्रीमती अर्चना गुर्जर
प्रधान निदेशक महोदया

संपादक मंडल

: श्री अभिषेक पँवार
श्री नीरज नेगी
श्री मनोज वाघेला
श्री ललित सोलंकी
श्री धर्मेन्द्र दोषी



श्रीमती गुरवीन सिन्हा

महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद

हमारी संयुक्त हिन्दी पत्रिका “आरोहण” का अंक प्रस्तुत करते हुए असीम हर्ष की अनुभूति हो रही है। किसी भी कार्य / विषय की प्रगति एवं सफलता की पहली शर्त होती है उसकी निरंतर गतिशीलता। पत्रिका की इस सार्थक और सफल यात्रा का श्रेय इसकी शुरुआती कार्यवाही से प्रकाशन एवं विमोचन तक जुड़े प्रत्येक व्यक्ति चाहे रचनाकार हो, सम्पादक मंडल का सदस्य हो या अन्य कोई व्यक्ति, उन सभी को देना चाहती हूँ।

हिन्दी पत्रिकाएँ हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं के विकास और संवर्द्धन में उल्लेखनीय भूमिका निभाती रही हैं। हमारे कार्यालय सदस्यों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रदर्शित करने और उसमें निखार लाने का सबसे प्रभावशाली माध्यम है हमारी पत्रिका “आरोहण”। निश्चित ही यह पत्रिका समाज के रीति-रिवाजों से परिपूर्ण होकर सामाजिक परिचय के साथ समाज के उत्थान में सहायक होगी।

“आरोहण” पत्रिका के प्रति आपका लगाव एवं उत्साह इसी तरह बना रहेगा, इसी विश्वास के साथ शुभकामनाओं सहित।

हस्ता/-

गुरवीन सिन्हा

आरोहण पत्रिका के 2017-18 के इस नए अंक को आप सब के सम्मुख रखते हुए हमें अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। विविध रंग बिरंगे मौक्तिक माला में पिरोई यह अद्भुत और अपने नए कलेवर व परिवेश में प्रस्तुत है। यह आप सभी के अतुलनीय सहयोग से ही संभव हो सका है, क्योंकि

*पहले भी मथ चुके समंदर, फिर से रत्न निकालेंगे
इस घरती का कण कण कंचन, जितना चाहे पा लेंगे*

और सच में इस पत्रिका के माध्यम से अनेकों छिपी प्रतिभाएं परिलक्षित हुई हैं, जिन्होंने विभिन्न विषयों व पहलुओं पर अपने उद्गारों को व्यक्त किया है, उन्होंने

*खुद अपनी पहचान बनाई, शोलों में भी राह बनाई,
जीवन का विस्तार किया है, सपनों को साकार किया है।
मेहनत से विश्वास जगाया, जीवन का इतिहास बनाया,
पत्थर को आधार दिया है, सपनों को साकार किया है।*

इस पत्रिका के माध्यम से आपके समक्ष जहाँ नारी, माता-पिता जैसे मार्मिक व संवेदनशील मुद्दों पर रचनाएं प्रस्तुत की जा रही हैं, तो वहीं मानवीय भावनाओं से जुड़े विषयों पर 'मनमंदिर', 'अंतर-बैकुंठ' और 'ईर्ष्या : असंतोष कि जननी' जैसी रचनाएं भी रखी जा रही हैं। एक ओर 'कबीर वाणी' और 'आशीर्वाद की अनुभूति' सीख दे रही हैं तो दूसरी ओर 'स्वच्छ भारत अभियान' से जुड़ी कृतियाँ वर्तमान सामाजिक मुद्दों को छेड़ रही हैं। इतना ही नहीं, विभिन्न विषयों जैसे 'बोन्साई', 'लम्हे' व 'हुंकार' जैसे काव्य भी आपको साहित्यिक रस से सराबोर कर देंगे। मतलब ये कि इस पत्रिका को नए परिवेश में लेकर हम प्रस्तुत कर रहे हैं। भारतवर्ष में हिन्दी भाषा ही वो भाषा है जन-जन को आपस में जोड़ती है। अतः अपनी भाषा का उत्थान देश के उत्थान के लिए आवश्यक है। भारतेन्दु हरिश्चंद्रजी ने सही ही कहा है कि

*अंग्रेजी पढ़ि के जदपि, सब गुन होत प्रवीन
पै निज भाषा-ज्ञान बिन, रहत हीन के हीन।
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को भूल
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को भूल।*

हम पुनः धन्यवाद देना चाहेंगे उन प्रतिभागियों का जिन्होंने अनेकों विषयों पर प्रकाश डाल कर हमारा मार्ग प्रशस्त किया है और उनको जिन्होंने अपने मूल्यवान सुझाव हमें प्रेषित किए ताकि 'आरोहण' का उत्तरोत्तर सुधार हो सके। हम आप सब के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं और भविष्य में भी आप सभी के सहयोग की आशा रखते हैं क्योंकि 'नए उत्तरदायित्वों के द्वार यहीं से तो खुलते हैं'।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना का नाम	रचनाकार	स्वरचित/संकलित	पृष्ठ
1.	आपके पत्र			7
2.	ईर्ष्या : असंतोष की जननी	रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	स्वरचित	10
3.	गीतिका	रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'	स्वरचित	11
4.	मैं एक नारी हूँ	वीना यादव	स्वरचित	12
5.	मन-मन्दिर	वीना यादव	स्वरचित	13
6.	आशीर्वाद की अनुभूति	मुकुन्द कुमारजी कंठ	स्वरचित	14
7.	तुम्हारे बिना मैं कुछ नहीं	वजीर सिंह	स्वरचित	19
8.	माँ की आंखों की नमी नहीं बदलती	रीतू सिंह	स्वरचित	20
9.	माँ बाप को बिखरने ना दें	रीतू सिंह	स्वरचित	21
10.	लघु कथा	कविता सिंह	संकलित	22
11.	कबीर वाणी	कविता सिंह	संकलित	23
12.	खुदा दोस्त	वंश वाघवाणी	स्वरचित	24
13.	बोन्साई	मल्लिका मुखर्जी	स्वरचित	25
14.	दुनिया को बदलना हो तो	मल्लिका मुखर्जी	संकलित	26
15.	हिन्दी दिवस का महत्व	छत्रपाल सिंह राठौड़	स्वरचित	28
16.	स्वच्छ भारत अभियान	कविश राठौड़	स्वरचित	29
17.	लम्हे	जितेन्द्र कश्यप	स्वरचित	30
18.	गुजरता है वक्त आज भी मेरा तो...	जितेन्द्र कश्यप	स्वरचित	30
19.	अंतर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस	सलिमा लाज़र	संकलित	31
20.	हुंकार	प्रदीप मधेशिया	स्वरचित	33
21.	आहट	प्रदीप मधेशिया	स्वरचित	34
22.	अंतरबैकुंठ	अर्चित्य सिंह बघेला	स्वरचित	35
23.	स्थानाप्ररण मूल्य निर्धारण	ए. मजूमदार एवं मुकेश जांगिड़	संकलित	37

आपके पत्र

1. आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'आरोहण' (वर्ष : 2015-16) की एक प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए धन्यवाद। राजभाषा के प्रति निष्ठा के मूल्य के साथ पत्रिका के सतत प्रकाशन के लिए बधाईयाँ।

पत्रिका में समाहित सभी कविता, कहानी एवं आलेख न सिर्फ मनोरंजक हैं बल्कि ज्ञानवर्धक एवं रोचक भी हैं। श्री अरुण जांगिड की 'माता-पिता का साथ : एक वटवृक्ष की छांव' व 'योग : संपूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी', श्री रमेशचन्द्र शर्मा चन्द्र की 'सपने देखिये, साकार भी करिये' तथा श्री प्रदीप मधेशिया की 'बटता हिन्दुस्तान' विशेष रूप से सराहनीय है।

पत्रिका का पृष्ठ सज्जा भी काफी आकर्षक है। पत्रिका के उत्तम सम्पादन के लिए संपादक मण्डल को बधाई।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
कार्यालय निदेशक लेखापरीक्षा,
वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा

2. आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "आरोहण" के 2015-16 के अंक की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित सभी रचनाएं अत्यंत ही उच्चतर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिन्दी प्रकोष्ठ)

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
झारखण्ड का कार्यालय, राँची

3. आपके कार्यालय के पत्र क्रमांक सं./हि.अ./पत्रिका-आरोहण/फा-210/129 दिनांक 2-1-2017 द्वारा राजभाषा आरोहण पत्रिका के वार्षिक अंक 2015-16 की प्राप्ति हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट हैं विशेष रूप से बटता हिन्दुस्तान, भारत महान तथा भूख की दुनिया में ईमान बरकरार है सराहनीय हैं। पत्रिका की साज-सजावट उत्कृष्ट दर्जे की है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए
शुभकामनाओं सहित ।

भवदीय,

हिन्दी अधिकारी

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(ले प)-१, महाराष्ट्र, मुंबई

4. आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'आरोहण' की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनायें उच्च स्तर की हैं। रचनाओं का यह उत्कृष्ट संकलन आपके कार्यालय की रचनात्मक प्रतिभा का दर्पण है।

श्री रमेश चंद्र शर्मा 'चंद्र' की रचना "गीतिका", श्री अरूण जांगिड़ का लेख "योग : सम्पूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी", श्री प्रदीप मधेशिया की रचना "भारत महान" एवं श्रीमती मल्लिका मुखर्जी की रचना "ईश्वर" विशेष सराहनीय है।

पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक मण्डल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखाधिकारी/राजभाषा कक्ष

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखा व हक) राजस्थान

5. आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी पत्रिका "आरोहण" के वार्षिक अंक की इस कार्यालय में प्राप्ति हुई है। आवरण पृष्ठ

बहुत सुन्दर है। लेख सामग्री उच्च स्तर की है। पत्रिका का सम्पादकीय बहुत अच्छा है। पत्रिका के बीच में जोड़े गए छाया चित्र पत्रिका को शोभनीय बनाते हैं। 'हिन्दी हमारा सम्मान है' यह उक्ति अति सुन्दर लगी। एक अच्छी पत्रिका के प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशा.)

प्रधान निदेशक, वाणिज्यिक लेखापरीक्षा एवं पदेन सदस्य लेखापरीक्षा बोर्ड का कार्यालय, बेंगलोर

6. आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'आरोहण' के वार्षिक अंक 2015-2016 की एक प्रति प्राप्त हुई सहर्ष धन्यवाद।

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री अरूण जांगिड़ का लेख "माता पिता का साथ : एक वटवृक्ष की छांव", श्री प्रदीप मधेशिया की कविता "बंटता हिंदुस्तान", कु. सिमरन राठौर का लेख "जिम्मेदार नागरिक के रूप में छात्र की भूमिका", श्री रमेशचंद्र शर्मा का लेख "सने देखिए, साकार भी करिए", श्रीमती मल्लिका मुखर्जी का लेख "समन्वित स्वर : एक अवलोकन", आदि रचनाएं उल्लेखनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका में दिए कार्यालयीन चित्र पत्रिका की सुंदरता को बढ़ाते हैं।

लेखकों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(अनिल त्रिपाठी)

हिंदी अधिकारी

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा)-II

महाराष्ट्र, नागपुर

7. आपके कार्यालय की वार्षिक हिन्दी पत्रिका “आरोहण” के वार्षिक अंक 2015-2016 की प्रति प्राप्त हुई। एतद्दर्थ धन्यवाद। पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं आवरण पृष्ठ अत्यन्त आकर्षक एवं सुन्दर है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं अत्यन्त रोचक, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। ‘वैष्णोदेवी की यात्रा’, ‘माता-पिता का साथ : एक वटवृक्ष की छांव’, ‘मीराबाई जीवन परिचय’, ‘योग : संपूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी’ तथा ‘जीवन में परिश्रम का महत्व’, रचनाएं विशेष रूप से उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

लेखापरीक्षा अधिकारी

(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार

(लेखापरीक्षा)

हरियाणा

8. आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित वार्षिक राजभाषा पत्रिका “आरोहण” के नवीनतम अंक (वर्ष 2015-2016) की एक प्रति हमारे कार्यालय को प्राप्त हुई। तद्देतु धन्यवाद।

पत्रिका के आवरण पृष्ठ पर छायांकित छायाचित्र एवं पत्रिका में प्रकाशित अन्य सभी राजभाषा गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र काफी अच्छी लगी। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उत्कृष्ट ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। विशेषकर श्री अरुण जांगिड (माता-पिता का साथ : एक वटवृक्ष की छांव), श्री रमेशचन्द्र शर्मा (गीतिका) और (सुखी दाम्पत्य जीवन), श्रीमती मल्लिका मुखर्जी (मंजिल खडी उजालों में) और (ईश्वर), श्री प्रदीप मधेशिया (बटता हिंदुस्तान) और (भारत महान) एवं श्री विद्या अय्यर (प्यारी सी वाट्सअप कविता) की रचनाएं अत्यन्त ही सराहनीय हैं।

पत्रिका के उत्तम संपादन एवं संकलन हेतु संपादन मंडल के सभी सदस्यों को साधुवाद तथा पत्रिका की निरंतर प्रगति हेतु हमारी हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

(आनन्द कुमार पाण्डेय)

सहायक लेखा अधिकारी/प्रशा. हिंदी सेल
एवं सम्पादक “वन्दे मातरम्”

महालेखाकार (लेखा एवं हक),

पश्चिम बंगाल

ईर्ष्या : असंतोष की जननी

- रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
(स्वरचित)

ईर्ष्या का पौधा नित्य पनपता है। व्यक्ति को स्मरण दिलाता है कि वह अन्यो से हीन है, अन्य व्यक्ति अधिक आदरणीय, साधन सम्पन्न व प्रतिभाशाली है। व्यक्ति अपनी तुलना अन्यो से करता रहता है। वह देखता है कि साधन सम्पन्नता अन्यो के पास है, उसके पास क्यों नहीं ? इसी से ईर्ष्या का बीज विकसित होता रहता है। जितनी ईर्ष्या बढ़ती जाती है उतना ही वह परेशान व दुःखी होता जाता है। ईर्ष्यालु व्यक्ति अपने विकास के बारे में सोच ही नहीं पाता। तब वह विकास के लक्ष्य का कैसे प्राप्त कर सकेगा ?

जब ईर्ष्या जीवन शैली बन जाती है तब व्यक्ति दूसरो से अपनी तुलना करता रहता है, जिससे उसकी कल्पना शक्ति व सोचने समझने की शक्ति भी कुंठित हो जाती है। परिणाम स्वरूप आत्म विश्वास शिथिल हो जाता है। जीवन में शिकायते ही शिकायत रह जाती है। ईर्ष्या का मानवीय स्वभाव कहे तो अनुचित न होगा।

ईर्ष्यालु व्यक्ति कभी अपने जीवन से संतुष्ट नहीं होता। असंतोष से घिरा रहता है। अन्यो की प्रगति उसे चैन से बैठने नहीं देती। ईर्ष्यालु व्यक्ति कुढ़ता रहता है, प्रतियोगिता में भाग तो लेता है, किन्तु पुरे मन से स्पर्धा में सम्मिलित नहीं होता।

मनो वैज्ञानिक कहते हैं किसी की सफलता से ईर्ष्या करना स्वयं को संकुचित करना है, कारण कि कोई किसी की सफलता का अपहरण नहीं कर सकता न किसी सफलता को छीना जा सकता है।

अभिभावको में देखा गया है कि अपने बच्चो की तुलना दूसरे बच्चो से करते हैं। कहते हैं कि अन्यो के बच्चें भी अपने बच्चो में ईर्ष्या के बीज बो रहे हैं। फिर वह अशुभ उपाय भी काम में लेने लगता है। बच्चे का आत्मविश्वास लडखडा जाता है। वे नहीं चाहते कि उनका बच्चा अशुभ कार्य करें, किन्तु बच्चा मां-बाप खुश करने के लिये चालाकियां होंशियारीयां करने लगता है। कारण अन्य बच्चो से ईर्ष्या है।

जर्मनी के प्रसिद्ध दार्शनिक वोल्फ का कथन है कि ईर्ष्या के बिना जीना एक बड़ी कला है जिसे हर व्यक्ति का सीखा चाहिए। जिसने यह कला सीख ली उसका जीवन सहज, सरल व आत्मीय भाव से भर जाता है।

ईर्ष्यालु व्यक्ति की जीवनयात्रा नीरस व अधुरी सी होती है, जो इसे मिला है उसका वह आदर नहीं करता, जो नहीं मिला, उसके लिये चीख पुंकार करता रहता है। अच्छा हो कि लोगे दूसरो को देखने की अपेक्षा स्वयं कि ओर देंखें। असफलता के कारणों का पता लगायें। पुरे मन से कार्य करें तो सफलता अवश्य मिलेगी।

हर व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से भिन्न होता है। उसका वैशिष्ट्य उसका वैशिष्ट्य है। कोई उसका स्थान नहीं ले सकता। वह अनुपम व अनूठा है। अन्यो से तुलना करने से ईर्ष्या का बीज पलपता है। ईर्ष्या से मुक्त होने के लिए किसी से तुलना न करें। जो भी कार्य करे, पुरे मन से करें। अपनी असफलता के लिये हम स्वयं उत्तरदायी होते हैं। अन्यो पर दोषारोपण करने का स्वभाव त्याग दे। आत्मनिरीक्षण करना सीखें। दूसरो की प्रगति विकास देख कर ईर्ष्या से न भरे, अपितु प्रसन्न हो तो अन्यो की प्रगति भी आगे बढ़ने के लिये प्रेरित प्रोत्साहित करती है।

- रमेशचन्द्र शर्मा 'चन्द्र'
(स्वरचित)

मिलन-जुलन त्योहारों पर अच्छा लगता है,
मरना-मिटना निज प्यारों पर अच्छा लगता है ।
अच्छे-अच्छे कामों में भी ठोट ढूँढते हैं,
लाँछन मढ़ना सरकारों पर अच्छा लगता है ।
ड्योढ़ी के भीतर भी कोई कैसे पहुँच गयी,
शक करना पहरेदारों पर अच्छा लगता है ।
वे हमसे नाराज बहुत हैं, उन्हें मनायेंगे,
दोष हमारी मनुहारों पर, अच्छा लगता है ।
विस्तारवाद की नीति असंगत निन्दनीय थी,
बन्धन लगाना विस्तारों पर अच्छा लगता है ।
न्यायनीति को दवा बताकर मनमानी करते,
हाथ उठे जब बजाचरों पर, अच्छा लगता है ।
देश बड़ा है जाति धर्म से सभी मानते हैं,
दण्ड पड़े जब गद्दारों पर अच्छा लगता है ।
कर्तव्यों की ओर ओर ध्यान क्यों जाता नहीं कभी,
अंकुश लगाना अधिकारों पर अच्छा लगता है ।
अबलाओं पर अँधियारे में पौरुष सिद्ध करें,
केस चले जब व्यभिचारों पर अच्छा लगता है ।
ऋतु बासंती फिर भी जन के मन में मायूसी,
उठना प्रश्न सरोकारों पर अच्छा लगता है ।
अँधियारों को मेट न पाये मिट-मिट गये स्वयं,
हमें भरोसा उजियारों पर अच्छा लगता है ।

मैं एक नारी हूँ

- वीना यादव
(स्व रचित)

मैं एक नारी हूँ
दुनिया कहती मुझ को अबला,
फिर भी मन से मैं नहीं हारी हूँ
मैं एक नारी हूँ
बेटी बनकर घर आँगन चहकाती,
पत्नी बनकर मैं घर को सजाती,
माँ बनकर मैं प्यार लुटाती,
फिर भी न कहती, मैं कभी थकी-हारी हूँ
मैं एक नारी हूँ
अंतरिक्ष में जाकर इतिहास रचाया,
सीमा पर भी फर्ज निभाया,
सभी क्षेत्रों में नाम कमाया,
बड़े-बड़े कार्यालयों में, मैं आज अधिकारी हूँ
मैं एक नारी हूँ
दुनिया कहती मुझको अबला,
फिर भी मन से मैं नहीं हारी हूँ
मैं एक नारी हूँ ।

मन-मन्दिर

- वीना यादव
(स्वरचित)

हे मानव ! मन है तेरा सुंदर मन्दिर
तू इसमें दीप जलाए जा,
हाथ है तेरे सुंदर फूल
तू इस जग को महकाएं जा,
जग है एक अथाह समुंदर
तू अपनी नाव चलाए जा,
अवश्य मिलेंगे तुझे किनारें
तू मन में विश्वास जगाए जा,
आने वाली हर बाधा को
तू हंस कर दूर भगाए जा,
मन है तेरा सुंदर मंदिर
तू इसमें दीप जलाए जा ।

आशीर्वाद की अनुभूति

- मुकुन्द कुमार जी कंठ
स्वरचित

एक मध्यम वर्गीय इंसान जब अपने सीमित आय के साथ चलना शुरू करता है तो उसे हर तरह की आर्थिक, सामाजिक एवं व्यावहारिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। लेकिन वह इतना आशावान होता है कि बस अब थोड़े ही दूर चलने के बाद सुख की मीठी छांव मिलेगी और दुःख दूर हो जाएंगे। यह सोचते-सोचते वह तकलीफों की कड़ी धूप में भागता रहता है लेकिन उसे सुख नहीं मिलता। संस्कृत में कहा गया है कि -

“सुखम आपतितम सेव्यम्, दुःखम आपतितम तथा, चक्रवत् परिवर्तन्ते सुखानिच दुःखानिच”

सुख और दुःख एक चक्र की तरह घूमते रहते हैं और आते-जाते रहते हैं लेकिन आम आदमी का यह अनुभव रहा है कि जीवन में दुःख लंबे समय तक रहता है और सुख क्षणिक। कभी-कभी तो आदमी के जीवन में मुसीबतों के ऐसे पहाड़ टूटते हैं कि वह पूर्ण रूप से बिखर जाता है, उसको लगता है जीवन यहीं समाप्त हो जाएगा। आशा की किरण आने के सभी दरवाजे भगवान ने बंद कर दिए हैं। लेकिन यह प्रायः देखा गया है कि जब आशा के सारे दरवाजे बंद हो जाते हैं और एक किरण भी नहीं दिखाई पड़ती तब ईश्वर एक छोटी सी खिड़की खोल देता है, जिसके जरिये मुसीबतों का सारा ढेर धीरे धीरे उतर जाता है। भगवान आपकी हर प्रार्थना सुनता है और हरदम हम पर निगरानी रखता है। हमारा हाथ ऐसे समय में थाम लेता है और हमें गिरने नहीं देता, चाहे हमें भरोसा हो या न हो।

ऐसी ही एक कहानी हमारी है जिसे ईश्वर ने पग-पग पर सहारा दिया और हमारा जीवन दुःख की कड़ी धूप से निकल कर सुख की ठंडी छांव में बसर होने लगा। यह कहानी बिलकुल सच है, सिर्फ पात्रों के नाम बदल दिये गए हैं। मैं इसे इसलिए आपको बताना चाहता हूँ कि हमने ये सारे उतार-चढ़ाव देखे और ईश्वर की कृपा से कठिन से कठिन रास्ते आसानी से कटते गए। ये सारे प्रसंग या कहानी बिलकुल सत्य है। हम अपने तीन बच्चों और पत्नी के सीमित परिवार के साथ इसनपुर के एक मकान में जीवन व्यतित करते थे। सीमित आय में घर चलाना, बच्चों के शिक्षा एवं स्वास्थ्य का खर्चा, लोन के हफ्ते, सामाजिक व्यवहार निभाना कितना मुश्किल होता है वह तो हर मध्यम वर्गीय परिवार भली-भांति जानता है लेकिन हमारी धर्मपत्नी सही माइने में सह धर्मचारिणी थी जो हमें हर कदम सहायता करती थी। हम दंपति धर्मपरायण थे इसलिए संतोष के साथ जीवन रथ का वहन करते थे लेकिन हर हरदम आती शारीरिक, आर्थिक और मानसिक आपत्तियों से काफी परेशान रहते थे। कड़ी मेहनत करने के बावजूद परेशानी पीछा नहीं छोड़ती थी। जब आदमी हद से ज्यादा परेशान होता है तो पंडितों और ज्योतिषियों के चक्र भी चला लेता है, लेकिन वो ग्रह शांति और किसी न किसी नंग की अंगूठी पहनाने के सिवा कुछ नहीं कर सकते और ये समाधान का रास्ता उससे उसको नहीं मिलता। हद तो तब हुयी जब एक दिन हमें रात को सोते-सोते खुनकी उल्टी हुई और अपने कमरे में से किसी की हंसने की आवाज आने लगी। हमने दूसरे दिन अपना पूरा मेडिकल जांच करवाया लेकिन कोई तकलीफ नहीं थी। यह देखकर हम दंपति और भी परेशान हो गए। भगवान को गुहार भी लगाई और इस आपत्ति से पीछा छुड़ाने के लिए प्रार्थना भी की। लेकिन जैसा मैंने पहले कहा था-जब हमे लगता है की सारे रास्ते बंद हो गए हैं तब भगवान एक खिड़की कहीं न कहीं खोल देता है।

कुछ समय बाद हमें एक मित्र अरविदभाई जोशी मिला। उसने कहा आप अपनी परेशानी से छूटने के लिए हर संभव प्रयास कर चुके हो। मेरी मानो तो आप एक बार राजकोट देवराजभाई को मिल लो। वह न तो जोगी-जती है और न ही तांत्रिक लेकिन वो पितृदोष के निवारण की विधि जानते हैं। हो सकता है आपको कोई पितृदोष हो या जमीन दोष हो तो मालूम पड जाएगा। हालांकि हम ये सब बातों में नहीं मानते थे लेकिन हारता क्या न करता!

मैं, मेरी धर्मपत्नी और उस मित्र को लेकर देवराजभाई के घर पहुंचे, देखा एक दुबला-पतला आदमी कुर्ता पाजामा पहने घर में बैठा था। मेरे मित्र ने मुझसे परिचय करवाया। मैंने देवराजभाई से पूछा कि हम ईश्वर की नियमित सेवा पूजा करते हैं तो भी क्या हमें पितृदोष लग सकता है? उसने कहा देवलोक और पितृलोक दोनों अलग अलग होते हैं और दोनों की तृप्ति भी अलग अलग प्रकार से होती है, ऐसा न होता तो भगवान रामचन्द्रजी क्यों गंगा के किनारे पितृ तर्पण करते?

फिर हमने अपनी व्यथा बताई तो देवराजभाई ने हमारे मकान के जगह की पुष्टि करने के लिए आंख मूंदकर अगल-बगल का माहौल बताया तो हम परेशान हो गए यह सोच कर की देवराज भाई ने राजकोट में बैठे बैठे अहमदाबाद के हमारे घर के आसपास के वातावरण से कैसे अवगत कराया और उन्होंने थोड़ी देर बाद हमसे कहा आपके मकान का जगह आपके लिए सही नहीं है, आप मकान बदल लो। हमने कहा-हम इतने आर्थिक संकट में हैं और आप हमें मकान बदलने की बात कर रहे हैं। ये मकान मेरा अपना है और मैं इसे कैसे बदलूँ और कहां जाऊँ? देवराजभाई ने कहा - अगर आप अपना कल्याण चाहते हैं तो ये महान आप किराए पर भी दे कर उसी सोसाईटी में दूसरा मकान ले लीजिए लेकिन ये जगह खाली कर दीजिए, यहां आप चैन से नहीं रह पाएंगे। पता नहीं ये बात हमें कुछ जंच नहीं रही थी।

देवराजभाई ने मेरी तरफ देखकर फिर कहा-अगर आपको ये संभव नहीं लग रहा है तो मैं आपको एक उपाय बताता हूँ। अभी आपके आसपास आपके चार पितृ बैठे हैं जो आपको नहीं दिखते लेकिन मुझे दिखते हैं, मैं उनका हुलिया बताता हूँ और आप सोच लेना की वे आपके कौन कौन रिश्तेदार हैं। और जो हुलिया उन्होंने बताया उसके ऊपर से हमें लगा कि एक हमारे स्वर्गस्थ पिताजी, चाचाजी, चाचीजी और एक हमारी छोटी भतीजी थी। हम देवराजभाई की बात सुन कर आश्चर्य से चकित रह गए। देवराजभाई ने कहा - मैं पितृओं की विधि ब्राह्मणों से करवाता हूँ और मेरा काम यही है कि मैं आपका तर्पण आपके पितृओं तक पहुंचाता हूँ और उनको यहां बुलाता हूँ। वो आपको क्या फल देंगे वो मुझे नहीं पता, मैं आपकी बात उनसे करवा दूंगा। आप खुद उनसे पूछ लीजिएगा और तय कर लीजिएगा कि आप उनके लिए क्या कर सकते हैं और वे आपके लिए क्या करेंगे। ये विधि जूनागढ में दामोदर कुंड के किनारे होती है। हमें लगा कि चलो ये भी एक बार करके देख लेते हैं, हो सकता है हमारे पितृ हमारी तकलीफों का समाधान कर दे। जब ये बात मैंने देवराजभाई से कही तो देवराजभाई ने कहा कि ये विधिका खर्च सात हजार रुपए होते हैं, ये ब्राह्मणों की पूजा दक्षिणा एवं साधन-सामग्री के होते हैं, इसमें से मुझे कुछ नहीं चाहिए। हमने कहा अगर इतने पैसे मेरी बचत में होते तो मैं आपके पास क्यों आता?

देवराजभाई ने कहा - पैसा नहीं है तो कोई बात नहीं, आप कलसे रोज पितृ के नाम का एक दीया करो और उनसे प्रार्थना करो कि हम आपकी तर्पण विधि करवाना चाहते हैं, आप हमें उचित व्यवस्था कर दीजिये। चमत्कार तो तब लगा कि जबसे दीया करके प्रार्थना करनी शुरू की और करीब दस दिन के अंदर पैसे की व्यवस्था भी हो गई। हमने देवराजभाई से बात कर के विधि की तिथि तय कर दी और निश्चित तारीख को जूनागढ दामोदर कुंड के किनारे जाकर तर्पण विधि सम्पन्न करवाई। विधि सम्पन्न करवाते ही देवराजभाई ने हमें कहा आपके शरीर में आपके पितृ नहीं आ सकते क्योंकि आप इसे मामलेमें नकारात्मक वृत्ति धारण करते हैं, आपकी धर्मपत्नी का शरीर इसमें सकारात्मक है और दिया जलाते ही हमारी पत्नी के शरीरमें पितृ का प्रवेश हुआ और उसके रंग-ढंग देखते ही मालूम पड गया कि वे मेरे पिताजी हैं। उसने पिताजी को प्रणाम किया और पूछा कि आपको क्या चाहिए, हमने आपका श्राद्ध पूरी श्रद्धा और निष्ठा से किया

है फिर आप क्यों हमारे साथ-साथ रहते हैं ? उन्होंने कहा-बेटा, मुझे कुछ नहीं चाहिए, मैं तो आप सबको प्रसन्न देखना चाहता हूँ, इसलिए आपके साथ रहता हूँ। फिर हमने अपनी सारी व्यथा बताई और पूछा कि पिताजी, इससे हमें छुटकारा कैसे मिले और हम शांति से रह सकें ? पिताजी थोड़ी देर शांत हो गए फिर कहा - आपके मकान में एक दुष्ट आत्मा का निवास है, जो आपको शांति से जीने नहीं देता और आपको शारीरिक, मानसिक और आर्थिक रूप से परेशान कर रहा है। मैं कोशिश करूंगा उसको वहां से दूर करने की और तब तक आपको मुझसे जब भी बात करनी हो दिया जलाके मुझे याद कर लेना।

और उसके बाद जब भी हमें आवश्यकता लगती हम अपने पिताजी को बुलाकर सलाह मशवरा करते और इस तरह हमने कई सामाजिक काम भी निपटाये। कुछ समय बाद जब पिताजी से बात हुयी तो उन्होंने कहा कि आपके घरमें जो दुष्ट आत्मा है वह मुझ से दूर नहीं हो सकता और अगर आप यहाँ रहेंगे तो आपको वह रहने नहीं देगा इसलिए मैं चाहता हूँ कि आप दूसरी जगह मकान ले लो। यह प्रयत्न मैं करूंगा। पैसों की चिंता आप मत करना। ये मकान हो सके तो बेच दो। और हमने मकान बेचने की कोशिश शुरू कर दी। पेपर में इश्तहार भी दिये, कई लोग आते थे देखने के लिए लेकिन लेने के लिए तैयार नहीं होते और होते भी तो बहुत कम दाम में।

कुछ दिनों बाद हमारा एक मित्र शैलेन्द्र हमारे घर आया, उस समय हमारी पत्नी कशीदा निकाल रही थी। शैलेन्द्र ने कहा “भाभीजी, आप इतना अच्छा कशीदे का काम कर सकती हैं तो आप इससे कमाई क्यों नहीं करती, हमारे एक मित्र जगदीपभाई ढेबर हैं जो रो मटीरियल देते हैं और डिजाइन भी देते हैं, अगर आप उसमें एंब्रोईडरी कर के देंगे तो उसके काफी अच्छे पैसे मिलते हैं। शैलेन्द्र हमारी स्थिति से पूरी तरह अवगत था। हमने उस आदमी का पता ले लिया।

एक दिन हम दोनों अखबारनगर के पास हाउसिंग बोर्ड में जगदीपभाई ढेबर को मिलने गए। वह मकान सिर्फ एक रुम किचन का था और ढेबरजी उस समय मदुरा कोटस में काम करते थे। उन्होंने एंब्रोईडरी के अच्छे अच्छे पीस बताए और कहा की अगर आप डिजाइन के मुताबिक काम कर देंगे तो हम सब उसे म्युजियम में रख कर अच्छा खासा कमा सकते हैं और इससे आपको अच्छी आमदनी हो सकती है। हम सहमत हो गए। औपचारिक बातें करते करते हमने पूछा “ढेबरजी, ये मकान तो काफी पुराना लगता है, आप अच्छी जगह क्यों नहीं चले जाते ?”

“आपने सच ही कहा, तीन बच्चों के साथ यह मकान अब छोटा पड़ता है और पुराना भी, हमने एक जगह मकान बुक करवाया है, टावर में हैं।” हमने कहा “हमारे लायक भी कोई मकान है तो ध्यान रखिएगा, हम भी इसनपुर से मकान बदलना चाहते हैं।”

अभी हम दोनों वो मकान देखने ही जा रहे हैं, क्यों न आप दोनों हमारे साथ ही चले और देख लें, नई स्कीम है, अच्छा लगे तो सोचिएगा। और हम चारों लोग दो स्कूटर से निकल गए, रास्ता ठीक नहीं था, हम रेलवे क्रॉसिंग से होकर सोला भागवत जाने के रोड पर आए जहां टावर बन रहे थे। हमारी श्रीमतीजी ने कहा इतनी दूर थोड़े ही हमने रहने आना है ? हमने कहा हम तो इनके साथ मकान देखने आए हैं, लेने थोड़े ही आए हैं ? ढेबर भाई का मकान आठवे मंजिल पर था और अभी तो ये टावर बन रहा था, स्कीम अच्छी लग रही थी। मैंने श्रीमतीजी को पूछा कि ये जगह कैसी लग रही है ? हम सब वहाँ कच्ची मिट्टी पर बैठे हुये थे, उन्होंने कहा ये भूमि बहुत शांत है और यहां काफी सुकून मिलता है। ये जमीन तो बहुत अच्छी है।

ढेबरभाई ने कहा-चलिये बिल्डर से मिलते हैं। हम वहां उनकी ओफिस में गए तो बिल्डरने पूछा कौनसा मकान लेना है ? मेरे बदले ढेबरभाई ने की कहा-मेरे नीचे वाला सातवे माले पर बुक कर दीजिये। मैंने कहा मुझे अभी बुक नहीं करवाना है, मेरे पास पैसों नहीं है, मेरा इसनपुर का मकान बिकेगा तो ही मैं ले पाऊंगा। बिल्डर ने कहा आप चिंता मत कीजिये, फिलहाल सिर्फ 100 रुपये दे कर बुक कर लीजिये और जब पैसे का इंतजाम हो तब ले लीजिएगा अन्यथा

अगर इस मकान का कोई ग्राहक आएगा तो मैं आपको फोन करके पूछ लूँगा। मैंने सोचा वैसे भी मैं इसनपुर वाले मकान से परेशान तो हूँ ही और वो बेचना ही है और यहां जगह अच्छी है तो उस मकान के पैसे से यहां मकान ले लूँगा। खैर मैंने उनको शगुन का 101 रुपया दे कर मेरा नाम लिखवा दिया। मन में आनंद की लहरें उठ रही थी कि मैं पितृदेव की कृपा से देवजीभाई के कथनानुसार मकान बदलने की प्रक्रिया में कदम बढ़ा रहा था। थोड़े ही दिनों के बाद अचानक देवराजभाई अहमदाबाद आए, मैंने उनको कहा कि मैंने एक जगह मकान लेने का सोचा है, आप जरा वहाँ चलकर देखें कि जगह सही है कि नहीं। वे मेरे कहने पर उस जगह पर आए, मैंने जिस कोर्नर पर मकान लिया था, वहाँ जा कर खड़े हो गए, बोले ये कोना सही नहीं है। फिर बारी-बारी से टावर के चारों कोनों में घूमने के बाद पश्चिम दिशा के कोने पर खड़े हो कर बोले कि इस कोने में किसी भी मंजिल का मकान खाली है तो उसे बुक कर लीजिये, आपके लिए अच्छा रहेगा। चलो बिल्डर से बात करते हैं। हम सब ओफिस में गए तो मालूम पड़ा कि उस लाइन में सिर्फ चौथी मंजिल पर ही मकान खाली था। हमारे कहने पर उसने 7 वीं मंजिल वाला मकान कैंसिल कर के 4 थे मंजिल वाला मकान बुक किया। बिल्डर ने कहा इसका दाम 7 वे माले से थोड़ा ज्यादा है। देवराजभाई ने कहा कोई बात नहीं लेकिन इनको यही मकान दीजिये। खैर आखिरी वक्त पर देवराजभाई का आना और सही मकान पसंद करना भी एक कुदरती संयोग की बात थी।

इधर दो माह बीत गए लेकिन मकान बिकने के कोई आसार नजह नहीं आते थे। पेपर में इश्तहार भी दिये, कई लोग आते थे लेकिन मकान मेन रोड से अंदर होने की वजह से देखकर चले जाते थे। एक जगदीशभाई रोहित जो बी.एड. कॉलेज में पढ़ाते थे वो भी आए, उनको मकान पसंद आया लेकिन उनकी कीमत में और हमारी कीमत में कोई सहमति नहीं बैठ पाती। इसी तरह एक दिन बिल्डर का फोन आया, उसने पूछा आप नौकरी कहा करते हैं? मैंने कहा कि मैं सेंट्रल गर्वमेंट ओफिस में करता हूँ। “आप एक काम कीजिए, अपनी सेलेरी स्लिप ले कर कल शाम को मुझे मिलिए।”

मैं दूसरे दिन अपनी पे-स्लिप लेकर बिल्डर (प्रशांतभाई) से मिला। मैंने कहा-मेरे वेतन में अतिरिक्त खर्चे कि कोई गुंजाईश नहीं है। उसने स्लिप देखी और कहा आप 5,000 रुपये जी.पी.एफ. में क्यों कटवाते हैं, मैंने कहा इस बहाने थोड़ी बचत हो जाती है और सालाना इन्कम टैक्स में से कटौती मिलती है। बिल्डर ने कहा-आप जी.पी.एफ. में मिनिमम कटवा लीजिये और बाकी का पैसा मकान के हफ्ते में भरेंगे तो आपका हसा भी भर जाएगा, मकान भी हो जाएगा और ब्याज सहित जो भी कटौती होगी उसकी इन्कम टैक्स में से राहत भी मिल जाएगी। और आपका इसनपुर का मकान जब भी बिके उस पैसे को इसमें न भरते हुये कहीं अच्छी जगह निवेश कर दीजिएगा। बस, क्या था, हमें इसकी बात से सहमत होना पड़ा। लोन के लिए 25 प्रतिशत मार्जिन मनी की समस्या भी बिल्डर ने मकान का ओवर एस्टिमेट करवा कर हल कर दिया, उसी दिन लोन के लिए दरखास्त भी करवा दी और ईश्वर की कृपा से काम इतनी सरलता से हो गया कि चौथे दिन लोन कि राशि भी मिल गई और मकान का पजेशन लेटर भी।

इधर मेरी जिम्मेदारियां काफी बढ़ गयी थी क्योंकि नए मकान में प्रवेश करने का समय नजदीक आ रहा था और बिल्डर को इलेक्ट्रिसिटी, औडा और लाईफ टाईम मेन्टेनन्स का चार्ज देना था, कुछ इधर-उधर कि जिम्मेदारियां थी जो सोचा था कि ये महान बिक जाए तो ये सारे छोटे-मोटे काम निबट जाए, लेकिन ये इसनपुर वाला मकान बिकने का नाम नहीं ले रहा था। मैं मानसिक रूप से थोड़ा परेशान हो गया था। इसी बीच हम दोनों वास्तु पूजन के लिए महाराज से मिलने गए क्योंकि करीब एक हफ्ते का ही समय बचा था। महाराज ने पूछा-क्या करने का है। मैंने महाराज को मेरी मुश्किलें बताई और कहा-महाराज! अगर पैसे कि व्यवस्था हो गई तो नव चंडी हवन के साथ वास्तुपूजन करेंगे अन्यथा सत्यनारायण भगवान की पूजा करेंगे। महाराज के घर में माताजी का मंदिर था, उन्होंने कहा-आप माताजी के मंदिर में 11 रुपये रख दीजिये और माताजी से प्रार्थना कीजिये। माताजी को आपके लिए जो उचित लगेगा उसकी व्यवस्था माताजी खुद करेगी। हम पूरी श्रद्धा से घर वापस आए।

दूसरे ही दिन जब मैं दफ्तर से घर आ कर शाम को घर में बैठ कर चाय पी रहा था तो मैंने श्रीमतीजी को कहा कि घर के पजेशन की तारीख नजदीक आ रही है, बकाया जो पेमेन्ट करना है वो बाकी ही रहता है और ये मकान भी बिकता नहीं। अगर ये मकान का सौदा हो जाए तो हम तुरंत ही अंबाजी माता के दर्शन को जाएंगे। अभी ये बात पूरी भी नहीं हुई थी और जगदीशभाई रोहित का स्कूटर दरवाजे पर आकर खड़ा हो गया। वे अंदर आए और कहा आप मुझे ये मकान दे दीजिये, मेरे पास इससे ज्यादा पैसे कि व्यवस्था नहीं हो रही और मुझे ये मकान चाहिए ही चाहिए। मैंने श्रीमतीजी की ओर देखा उन्होंने मुक सहमति दर्शाई और मैंने हाँ कह दी। जगदीशभाई ने तुरंत दो लाख मुझे दे दिये और कहा कि ये सौदा हमारा पक्का समझिए और ये एडवांस ले लीजिये। मैंने तुरंत महाराज को फोन किया और कहा कि माताजी ने हमारी व्यवस्था कर दी है और अब हम नवचंडी हवन के साथ धूमधाम से वास्तुपूजन करेंगे। और हुआ भी यही, हम बड़े आनंद के साथ दूसरे दिन अंबाजी माता के दर्शन करके आ गए और एक हफ्ते के अंदर माताजी की असीम कृपा से बड़े ही सांस्कृतिक ढंग से शास्त्रोक्तानुसार माताजी का हवन किया, वास्तुपूजन किया। हवन पूजन समाप्त होने पर महाराज ने कहा की वैसे तो मैंने बहुत हवन पूजा करवाई है, और उसकी पूरी दक्षिणा लेता हूँ। इसलिए पेशेवर तौर से नहीं लेकिन दिल से कहता हूँ कि ये जगह इतनी शांत और पवित्र है कि आज हवन करवाने से जो मुझे आंतरिक खुशी मिली है वो आज के पहले कभी नहीं मिली। ब्राह्मणों को संतोष पूर्वक भोजन और दक्षिणा दे कर विदा किया और हमारे समाज के सारे लोग भोजन से तृप्त हो कर हमें आशीर्वाद दे कर विदा हुए। इसके बाद हम सब इसनपुर से सामान् शिफ्ट कर के यहां गृहप्रवेश कर गए। दिन बड़े आनंद के साथ अच्छी तरह से व्यतीत होने लगे।

एक दिन जगदीशभाई रोहित हमारे घर पर आए, मैंने सोचा मकान का दस्तावेज करवाने बाकी के पैसे लेकर आए होंगे। उन्होंने मुझे इसनपुर के मकान की चाभी दी और कहा कि अब मुझे ये मकान नहीं चाहिए, मेरी और जगह व्यवस्था हो गई है। आप मुझे जो बयाने के तौर पर दो लाख रुपये दिये थे वो मुझे वापस कर दीजिये। मैंने कहा आपके वो पैसे से तो यहां का सारा खर्च किया है, ये तो सारे हवन, वास्तुपूजन और भोजन समारंभ में खर्च हो गए हैं, इसलिए पैसे तो अब मेरे पास नहीं हैं। हां अगर आप मुझे दूसरा ग्राहक ला दे या मुझे कोई दूसरा कोई खरीददार मिल जाता है तभी मैं आपका पैसा लौटा पाउंगा। वे खिन्न हो गए।

श्रीमतीजी ने कहा - जगदीशभाई इस मकान के असली खरीददार थे ही नहीं फिर भी माताजी ने अपना और हमारा सारा काम करवाने के लिये व्यवस्था जगदीश भाई से करवा ली। इसलिए जैसे ही इस मकान का सौदा हो जाता है तो बयाने का पूरा पैसा वापस कर देंगे। दो महिना हमारे काफी कश्मकश में गुजरे।

जगदीशभाई का रोज फोन करना, वैयक्तिक रूपसे मिलना और दूसरा सौदा इच्छानुसार जल्दी न होना हमारी मुश्किले बढ़ा रहा था। फिर हम दोनों ने माताजी कि दिलसे प्रार्थना की और कहा कि आपने हमारा मकान दिलवा दिया, अब जगदीशभाई को भी उनकी इच्छित व्यवस्था करवा दीजिये जिससे सब सुखी रहे और तीसरे ही दिन इसनपुर से एक पंजाबी भाई आए और जगदीशभाई ने जीतने में सौदा तय किया था उससे 25,000 रुपये ज्यादा दे कर मकान हमारा खरीद लिया। जैसे ही शाम को उनका पैसा आया, हमने रात को ही जगदीशभाई के घर जा कर उनके सारे पैसे लोटा दिये और उनका हार्दिक आभार मानते हुए कहा की जगदीशभाई, मुझे लगता है कि माताजी ने मेरा काम पूरा करवाने के लिए ही आपको निमित्त बनाया था। हम आज भी 15 साल से इस मकान में बहुत सुखपूर्वक रह रहे हैं और ईश्वर की असीम कृपा हम पर बनी रहती है। और हमने ये अनुभव किया है जब जब हम मुसीबत में होते हैं और भगवान को सच्चे दिलसे प्रार्थना करते हैं, वे अवश्य हमारी मदद करते हैं और इस तरह से हमारी ईश्वरीय अनुकंपा एवं चमत्कारों वाली संघर्षभरी सत्यकथा पूरी होती है। इसके अंत में मैं श्री देवराजभाई, श्री ढेबरभाई एवं श्री जगदीशभाई का जितना उपकार मानु उतना कम है। ये कथा आपको बताने का तात्पर्य है कि सच्चे दिल से परमात्मा को की गई प्रार्थना कभी व्यर्थ नहीं होती।

तुम्हारे बिना मैं कुछ नहीं

- वजीर सिंह
(स्वरचित)

पता नहीं क्यों ये जिंदगी तुझ बिन अधूरी सी लगती है
पता नहीं क्यों तेरी आदत सी हो गई है अब मुझ को
लगता है कि तुम्हारे बिना मैं कुछ नहीं
लगता है कि मेरी सांसे थम जाएगी तेरे बगैर
फिर भी पता नहीं क्यों....

कभी कह नहीं पाता तुमसे ये सब
कभी बयाँ नहीं कर पाता हूँ उस अहसास को
तुम्हारे दूर जाने से मेरे टूटने का अहसास
तुम्हारे दूर जाने से मेरे बिखरने का अहसास
एक अजीब सी खामोशी और अकेलेपन का अहसास
पता नहीं क्यों ये जिंदगी तुझ बिन अधूरी सी लगती है

कभी शौक था खूब दोस्त बनाने का हमें भी
कभी शौक था खूब यारी जताने का हमें भी
पर गहराई से समझा तो दुनिया का चेहरा अलग ही पाया
दुनिया की भीड़ में कुछ ही चेहरों को अपना पाया
पता नहीं क्यों ये जिंदगी तुझ बिन अधूरी सी लगती है ।

ना जाने क्यों तुमसे मिलकर अहसास होता है कि
लोगों के इस मेले में कोई अपना भी है
अब एक अजीब सी सिमटन है सीने में
अलग सा ठहराव आ गया है जीने में
ना किसी सुख में 'उमंग' ना किसी दुख में 'शोक'
इस शून्यता के अहसास में भी तेरा ही अहसास है
लगता है जैसे तू मेरी सांसों के ही पास है
लो आज कहता हूँ तुमसे कि मैं तुम बिन अधूरा हूँ
करता हूँ इकरार कि मैं तुम्हारे साथ ही पूरा हूँ ।
करता हूँ इकरार कि मैं तुम्हारे साथ ही पूरा हूँ ॥

माँ की आँखों की नमी नहीं बदलती

- रीतू सिंह
(स्वरचित)

सब कुछ बदल जाता है जीवन में,
पर माँ की आँखों की नमी नहीं बदलती ।
वक्त के साथ-साथ कुदरत बदलती रहती है,
कि वो ही है जिसके दिल में औलाद की जगह नहीं बदलती ।

औलाद को खाना खिलाकर सोचती है जैसे उसी ने खा लिया हो,
औलाद को दूध पिलाकर सोचती है जैसे उसी ने पी लिया हो ।
ना जाने कौन सा अहसास जोड़े रखता है बच्चों से माँ को,
कि औलाद को कुछ हो जाये तो वो मीलों दूर बैचेन हो जाती है ।

खुद चिथड़ों से तन ढँककर भी वो
औलाद को जीने का सलीका सिखाती रहती है,
बात करने का तरीका व तहजीब सिखाती रहती है,
दुनिया में कैसे लड़ना दुखों से है ये सिखाती रहती है,
अपनी ऊंगली उनकी मुठ्ठी में पकड़ाकर उन्हें चलना सिखाती रहती है ।

पर आता है वक्त जब उसका हाथ थामने का
तो जाने क्यूँ उसके चारों बेटे आपस में लड़ते से दिखते हैं ।
भूल गये सारे बेटे कि उनकी रगों में दौड़ता लहू
उनकी बूढ़ी माँ के दूध का कर्जदार है,
पहले जो सब कुछ उन सबका साझा हुआ करता था,
आज अलग होकर उनका अपना-अपना हो गया,
पहले जो सबकी हुआ करती थी पर
आज रही ना जो किसी की भी
वो थी उनकी बेबस लाचार बूढ़ी माँ....
आज छोड़ गई जो इस जग को भी
उनकी ही सलामती की दुआ करते-करते....

सच ही कहा है किसी ने कि
सब कुछ बदल जाता है जीवन में,
पर माँ की आँखों की नमी नहीं बदलती ।
पर माँ की आँखों की नमी नहीं बदलती ॥



हिन्दी पखवाड़े में दीप प्रज्ज्वलित करते हुए मुख्य अतिथि महोदया डॉ. रुपा मेहता एवं निदेशक महोदय श्री मुकेश लाल



मुख्य अतिथि महोदया का शॉल द्वारा सम्मान करते हुए उप महालेखाकार प्रशासन श्रीमती रचना सिंह



सरस्वती वंदना करती हुई श्रीमती रंजना मांकड़

हिन्दी पखवाड़े में कार्यक्रम संचालन करते हुए श्री वजीर सिंह



मुख्य अतिथि महोदया संभाषण देते हुए



कार्यक्रम के दौरान उपस्थित कार्यालय सदस्यगण



वर्ष 2015-16 में तीनों कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी में
सर्वश्रेष्ठ कार्य-निष्पादन करने वाले
तीनों अनुभागों के प्रतिनिधियों को
राजभाषा शील्ड देकर सम्मानित किया गया....



कार्यालय महालेखाकार आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा
गुजरात, अहमदाबाद के अनुभाग के सदस्य

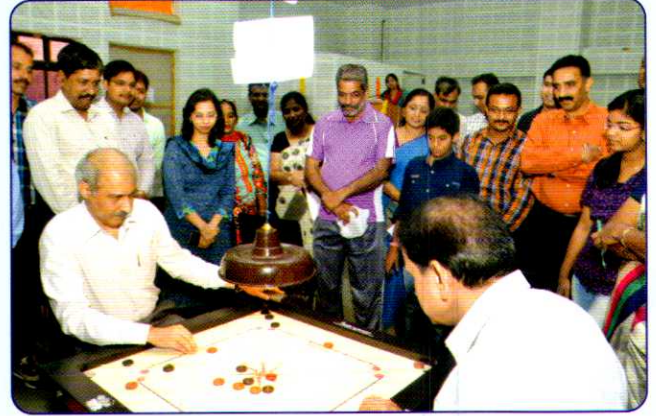


कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद
के अनुभाग के सदस्य



कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक्क) गुजरात, शाखा अहमदाबाद
के अनुभाग के सदस्य

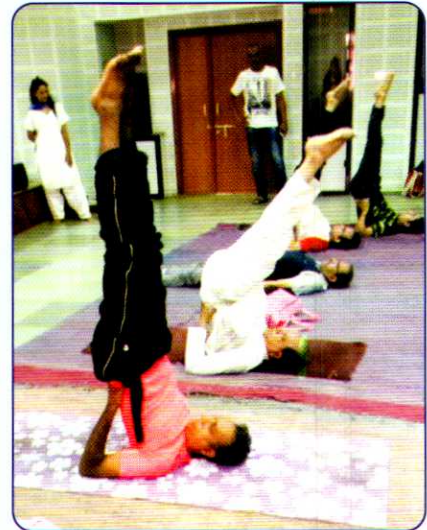
भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग की पश्चिमी क्षेत्र
कैरम प्रतियोगिता का उद्घाटन करते हुए
प्रधान महालेखाकार (भूतपूर्व) एवं प्रधान निदेशक महोदय (भूतपूर्व)



कार्यक्रम के दौरान उपस्थित कार्यालय सदस्यगण

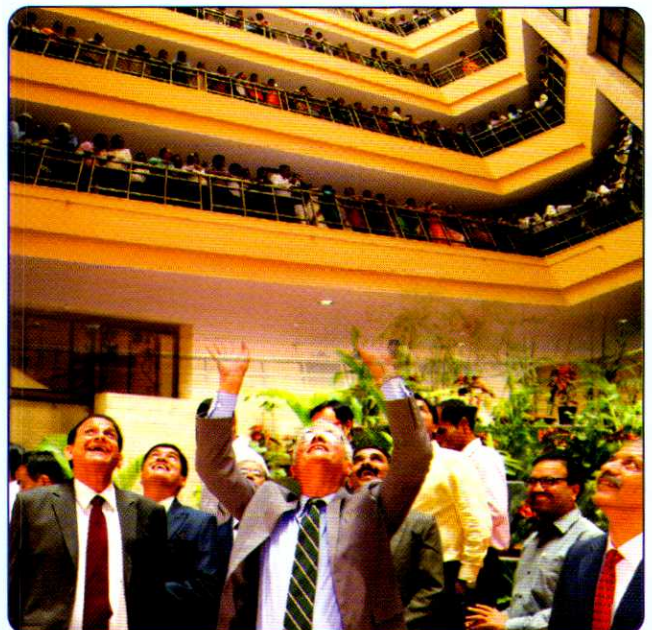


अंतरराष्ट्रीय योग दिवस की झलकियाँ





भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
श्री शशिकान्त शर्मा के
कार्यालय आगमन की झलकियाँ



भारत के उप-नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक
श्री पी. मुखर्जी के
कार्यालय आगमन एवं नर्मदा आवासीय
कॉलोनी के दौरे की झलकियाँ

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह एवं पुरस्कार वितरण की झलकियाँ



माँ-बाप को बिखरने ना दे

- रीतू सिंह
(स्वरचित)

ऊपर वाले की बनाई इस कायनात में भगवान है माँ-बाप,
जो अपनी औलाद के लिए जीते और मरते हैं,
जो अपनी बड़ी-बड़ी खुशियाँ छोड़ देते हैं,
औलाद की छोटी-छोटी ख्वाहिशों के कारण
क्या है माँ ?

कैसे ? औलाद को नौ महीने अपनी कोख में रखती है माँ,
कैसे ? कफन सिरहाने रखकर औलाद को जन्मती है माँ,
कैसे ? बच्चों के पेट भरने की खातिर खुद पानी पीती रहती है माँ,

क्यों ? उन्हे पालने के लिए खुद मर-मरकर जीती रहती है माँ,

कैसे ? हर रोज उघडते रिश्तों की तुरवाई करती रहती है माँ,
क्या है पिता ?

पहाड़ की तरह खड़े हुए एक अहसास का नाम है पिता,
अकेले में रो कर भी कुनेब को सम्भालने का नाम है पिता,
खुद फटे हुए मोजे-जूते और कपड़े-लत्ते पहनकर भी,
औलाद को ब्रान्डेड क्लोथ-फुटवीयर पहनाने का नाम है पिता,
खामोशी के साथ प्यार जताने का नाम है पिता,

खुद के अनुभवों से परिवार को चेताने का नाम है पिता,
बेटियों की हिफाजत का नाम है पिता,

बेटियों को उनके घर भेजने की जिम्मेदारी का नाम है पिता,
खुद बसों में धक्के खाकर बेटों को बाईक-कार दिलाने का नाम है पिता,

सच कहूँ तो सारा बोझ खुद उठाकर औरों को हल्का करने का नाम है पिता,

बहुत दुखता होगा एक माँ का कलेजा,

जब उसका जवान बेटा उसे अकेला कर जाए ।

जिसे वो बुढ़ापे का सहारा समझती थी,
वो ही जब उसे सरे-बाजार रूसवा कर दे ।
जिसे कभी बोलना सिखाया था उसने ही,
वो ही जब उसे तहजीब सिखाने लग जाये ।
बहुत दुखता होगा एक माँ का कलेजा,
जब उसका जवान बेटा उसे अकेला कर जाये ।
छुपकर रोता है एक पिता, जब खुद को तन्हा पाता है,
उसका जवान बेटा जब अपनी बीवी-बच्चों में ही खो जाता है,
उसके साथ है तो बस दीवार पर लगी उसकी मृत बीवी की तस्वीर,
हर रोज झाँककर जिसमें वो खुद ही को ढूँढता रहता है,
पूछता है हररोज उससे, क्यों चली गई छोड़कर यहा अकेला
कि मेरे ही बनाये घर में अब मेरी ही कद्र नही,
एक तुम ही थी मेरी अपनी, तुम भी छोड़कर चली गई,
अब किसी से ना है कोई उम्मीद और ना है कोई आस,
आ जाओ लौटकर या मुझे भी बुला लो अपने पास,
माँ याद रखें माँ-बाप की भागदौड़ का नतीजा है हमारी सांसे
उम्मीद है अब वक्त का पहिया उल्टा दौड़ेगा,
माँ-बाप को अकेला छोड़ने की सोच को तोड़ेगा,
अब हर औलाद करेगी मान व सम्मान उनका,
करो वादा खुद से कि माँ-बाप को बिखरने नहीं देंगे ।
करो वादा खुद से कि माँ-बाप को बिखरने नहीं देंगे ।

लघु कथा

- कविता सिंह
(संकलित)

एक बार की बात है एक राजा था। उसका एक बड़ा सा राज्य था। बड़ी एक दिन उसे राज्य घूमने का विचार आया और उसने देश राज्य भ्रमण की योजना बनाई और घूमने निकल पड़ा। जब वह यात्रा से लौट कर अपने महल आया उसने अपने मंत्रियों से पैरों में दर्द होने की शिकायत की। राजा का कहना था कि मार्ग में जो कंकड़-पथर थे वे मेरे पैरों में चुभ गए और इसके लिए कुछ इंतजाम करना चाहिए।

कुछ देर विचार करने के बाद उसने अपने सैनिकों व मंत्रियों को आदेश दिया कि राज्य की संपूर्ण सड़कों को चमड़े से ढक दिया जाए। राजा का ऐसा आदेश सुनकर सब सकते में आ गए। लेकिन किसी ने भी मना करने की हिम्मत नहीं दिखाई। यह तो निश्चित ही था बस काम के लिए बहुत सारे रुपये की जरूरत थी। लेकिन फिर भी किसी ने कुछ नहीं कहा। कुछ देर बाद राजा के एक बुद्धिमान मंत्री ने युक्ति निकाली। उसने राजा के पास जाकर डरते हुए कहा कि मैं आपको एक सुझाव देना चाहता हूँ।

अगर आप इतने रूपयों को अनावश्यक रूप से बर्बाद न करना चाहे तो एक अच्छी तरकीब मेरे पास है, जिससे आपका काम भी हो जाएगा और अनावश्यक रूपयों की बर्बादी भी बच जाएगी। राजा आश्चर्यचकित था क्योंकि पहली बार किसी ने उसकी आज्ञा न मानने की बात कही थी। उसने कहा, “बताओ क्या सुझाव है”। मंत्री ने कहा कि पूरे राज्य की सड़कों को चमड़े से ढकने के बजाय आप चमड़े के एक टुकड़े का उपयोग कर अपने पैरों को ही क्यों नहीं ढंक लेते। राजा ने अचरज की दृष्टि से मंत्री को देखा और उसके सुझाव को मानते हुए अपने लिए जूता बनवाने का आदेश दे दिया।

सीख : यह कहानी हमें एक महत्वपूर्ण पाठ सिखाती है कि हमेशा ऐसे हल के बारे में सोचना चाहिए जो ज्यादा उपयोगी हो। जल्दबादी में अप्रायोगिक हल सोचना बुद्धिमानी नहीं है। दूसरों के साथ बातचीत से भी अच्छे हल निकाले जा सकते हैं।

कबीर वाणी

- कविता सिंह
(संकलित)

(1) जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ ।

मैं बपुरा बुडन डरा, रहा किनारे बैठ ॥

अर्थ : जो प्रयत्न करते हैं वे कुछ न कुछ वैसे ही पा ही लेते हैं, जैसे कोई महेनत करने वाला गोताखोर गहरे पानी में जाता है और कुछ ले कर आता है, लेकिन कुछ बिचारे लोग ऐसे भी होते हैं जो डूबने के भय से किनारे पर ही बैठे रह जाते हैं और कुछ नहीं पाते ।

(2) दोष पराए देखि करि, चहा हसन्त हसन्त ।

अपने याद न आवई जिनका आदि न अंत ॥

अर्थ : यह मनुष्य का स्वभाव है कि जब वह दूसरों के दोष देखकर हंसता है, तब उसे अपने दोष याद नहीं आते जिनका न आदि है न अंत ।

(3) निंकद नियरे राखिए, आंगन कुटी छ्वाय ।

बिन पानी साबुन बिना निर्मल करे सुभाय ॥

अर्थ : जो हमारी निंदा करता है उसे अपने अधिकाधिक पास ही रखना चाहिए । वह तो बिना साबुन और पानी के हमारी कमिया बता कर हमारे स्वभाव को साफ करता है ।

(4) दुर्लभ मानुष जन्म है, देह न बारम्बार ।

तरुवर ज्यो पता झडें, बहुरि न लागे डार ॥

अर्थ : इस संसार में मनुष्य का जन्म मुश्किल से मिलता है । यह मानव शरीर इसी तरह बारंबार नहीं मिलता । जैसे वृक्ष से पता झड़ जाए तो दोबारा डाल पर नहीं लगता ।

(5) कबीरा खड़ा बाजार में, मांगे सबकी खैर ।

ना काहू से दोस्ती न काहू से बैर ॥

अर्थ : उस संसार में आकर कबीर अपने जीवन में बस यही चाहते हैं कि सबका भला हो और संसार में यदि किसी से दोस्ती नहीं तो दुश्मनी भी न हो ।

माटी का एक नाग बनावे

पूजे लोग लुगाई ।

जिंदा नाग जब घर में निकले

ले लाठी धमकाया ॥

जिंदा बाप कोई ना पूजे

मरे बाद पुजवाया ।

मुट्ठी भर चावल लेके

कौवे को बाप बनाया ॥

(नोट : उपरोक्त दोहें कबीर वाणी नामक रचना से लिए गये हैं ।)

खुदा दोस्त

- वंश वाधवाणी
(स्वरचित)

एक तुझसे है खुद मेरी दोस्ती,
बसी मेरे दिल में तेरी हस्ती ।
दुआ से तेरी मिली ये जिंदगी,
तुझ पे ही खत्म मेरी हर बंदगी ।
तू ना होता तो क्या होता,
हर लम्हा जैसे एक सजा होता ।
तेरी याद से जुड़ी मेरी हर खुशी,
जो तू नहीं तो हालत-ए-बेबसी ।
जब तक जियू तेरा साथ रहे,
तुझसे जुड़े मेरे हर जज्बात रहे ।
तू है तो हर चेहरे पे है नूर,
पाकर तुझे बनता पत्थर भी कोहिनूर ।
यही मांगता हूँ तेरे दर पर ए खुदा,
करना ना कभी मुझे खुद से जुदा ।

बोन्साई

- मल्लिका मुखर्जी
(स्वरचित)

यौवन की दहलीज पर कदम रखते ही
सपनों के पर निकल आए,
उम्मीदें लहराने लगीं मन-आकाश में, पर
यथार्थ को छूते ही समझ में आ गया ।
मेरा होना कोई मायने नहीं रखता इस जहाँ में,
एक मुट्ठी आसमाँ भी मेरा नहीं हो सकता ।
कतरने लगी मैं सपनों की टहनियाँ,
दूर होती गई जीवन की खिली धूप से ।
अब बारी थी इरादों की ।
इरादे वटवृक्ष बन फैलाने लगे थे
अपनी जड़ें हवाओं में भी,
यदि समय से नहीं रोका गया तो !
जड़ों की भी कर दी कुछ कटाई-छँटाई
अपने अस्तित्व के आकार को काबू करने का
तरीका आ गया मुझे ।
फिर सज गई हकीकत की खिड़की पर
सुन्दर बोन्साई बन ।
खुद को बहलाना भी तो सीख लिया मैंने,
नए आकार में ढलने का मज़ा ही कुछ और है !

दुनिया को बदलना हो तो

- मल्लिका मुखर्जी
(संकलित)

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा से वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी के पद से मेरी सेवानिवृत्ति के अवसर पर मित्रों की ओर से प्रेम स्वरूप कई उपहार मिले। मेरी सखी मोनिका, जो कि वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी के पद पर कार्यरत है, ने मुझे अमेरिका मनोचिकित्सक (Hypnotherapist) और लेखक डॉ. ब्रायन वीज (Dr. Brian Weiss) की अंग्रेजी पुस्तक (Messages from the Masters) की हिन्दी अनुदित पुस्तक 'दिव्यात्माओं के संदेश' बतौर उपहार दी। इस पुस्तक को पढ़कर पुनः एहसास हुआ कि पुस्तक से अच्छा कोई मित्र नहीं। अतः इस पुस्तक में उल्लिखित कुछ सुविचारों के बारे में मैं यह लेख लिख रही हूँ। यह पुस्तक निश्चय ही मनुष्य की आध्यात्मिक उन्नति के लिए पथप्रदर्शन करने के साथ ही भीतरी शान्ति व प्रसन्नता को पाने की तकनीक सिखाती है। जीवन में सकारात्मक परिवर्तनों के लिए सही समझ सब से बड़ी चीज है। जैसे ही हम अपने वास्तविक स्वरूप को समझने लगते हैं, हमारा जीवन बदलने लगता है और हम दुनिया को बदल सकने की क्षमता महसूस करने लगते हैं। पुस्तक के आठवें अध्याय 'दुनिया को बदलना' में लेखक के विचार अत्यन्त तर्क संगत है।

दुनिया में संतुलन बनाए रखने के लिए सह अस्तित्व एवं लयबद्धता होनी आवश्यक है। प्रकृति संतुलित है एवं सभी जीवजंतु सुव्यवस्था में जीते हैं, लेकिन मनुष्य अभी तक ऐसा करना नहीं सीख पाए हैं। वे लगातार स्वयं को नष्ट करने में लगे हैं। उनके कार्य में न तो कोई व्यवस्था होती है, न ही कोई विवेकसंगतता जबकि प्रकृति में ऐसा बिलकुल नहीं है। प्रकृति ऊर्जा है, जीवन है तथा पुनःचक्रण है लेकिन मनुष्य केवल विध्वंस करते हैं। वे प्रकृति का विध्वंस करते हैं, अन्य मानवों का विध्वंस करते हैं। अंततः वे स्वयं को भी नष्ट कर लेंगे।

हम सभी एक बेहतर समाज में रहते हुए एक बेहतर जीवन का ख्वाब देखते हैं। हालांकि आज के हालात में बिना भ्रमित हुए, बिना निराश हुए तथा अपने चारों ओर मौजूद मतलबी लोगों से त्रस्त हुए बिना एक दिन भी गुजार पाना मुश्किल होता जा रहा है। अधिकांश लोग अपना उल्लू सीधा करने में लगे जान पड़ते हैं और इस प्रक्रिया में वे असंवेदनशील हो गए हैं। हमें लगता है कि इस स्थित को सुधारना हमारे वश में नहीं है, केवल सत्ता पर बैठे लोग ही स्थितियों में कोई बदलाव कर सकते हैं।

दुनियाँ के वर्तमान हिंसक, प्रतियोगी तथा धृणा के संचालित स्वरूप में परिवर्तन कुछेक बुद्धों के प्रयासों से संभव नहीं हो सकता, चाहे वो विश्व के सबसे शक्तिशाली नेतृत्वकर्ता ही क्यों न हो। आम लोगों द्वारा हर रोज किये जानेवाले सहिष्णुता एवं सहृदयतापूर्ण कार्य-व्यवहार से ही ये दुनिया अधिक सुन्दर, अधिक सुकून भरी बन सकती है। एक दूसरे से लड़ते व मरते-मारते रहकर हम खुशी नहीं पा सकते।

यदि हम इस धरती पर रहते हुए बुद्धत्व प्राप्त करने को अपने प्रधान लक्ष्य के रूप में स्वीकार कर लें तो हम दुनिया को बदलने की दिशा में अग्रसर हो सकते हैं। दुनिया में बदलाव के लिए कोई समय सीमा तय नहीं है। शुरुआत ही महत्वपूर्ण है। हजारों मील की यात्रा एक कदम से ही शुरू होती है। इस यात्रा का पहला कदम है अपने भय और प्रकृति से अलगाव के भ्रमों को दिलोदिमाग से निकाल कर सहृदयता दर्शाने वाले कार्यों की शुरुआत करना, चाहे योजनाबद्ध तरीके से हो या यूँ ही। यदि हम अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी में करुणा एवं सहिष्णुतापूर्ण कार्यों का अभ्यास शुरू कर दें तथा दूसरों के जीवन में खुशियाँ लाने वाले छोटे-छोटे कार्यों को अमल में लाना शुरू कर दें, तो धीरे धीरे हमारे आसपास की दुनिया में बदलाव दिखाई देने लगेगा। संभवतः, ये उतना ही सरल है जितना कि किसी से अच्छी तरह पेश आना। इन कार्यों का मंहगा या जटिल होना जरूरी नहीं है।

हमारे सबसे महत्वपूर्ण कर्तव्यों में से एक है-अपने बच्चों को बाल्यावस्था से ही सही मूल्य एवं सही व्यवहार सिखाना, क्योंकि बेहद छोटे बच्चे भी हमें बेदह करीब से देख रहे होते हैं। वे उन्हीं चीजों से सीखते हैं जिन्हें वे देखते हैं जिनमें हमारा व्यवहार हमारे मूल्य तथा हमारा रवैया भी शामिल है। यदि हम घृणा से भरे हुए और हिंसक हैं तो वे भी यह अवगुण सीखेंगे क्योंकि वे हमारी सोच से कहीं ज्यादा बातें समझते हैं।

हमारी सभ्य संस्कृति ही हमें नाकाम कर रही है। हमें सिखाया जाता है कि दूसरे के नुकसान को अपने फायदे में बदलो, अपने साथियों को कन्धों पर पैर रखकर शीर्ष पर पहुंचो। हमें प्रतियोगी व निर्मम होना तथा अपने पैरो तले रौंदे जा रहे लोगों की भावनाओं की उपेक्षा करना सिखाया जाता है और हमारे अंदर बहुत छोटी उम्र से ही हिंसा के बीज बो दिए जाते हैं।

हालात को बदलने की शुरुआत हमें अपने बच्चों से करनी होगी। उन्हें प्रेम एवं सहृदयता का, विश्वास एवं उम्मीद का, करुणा एवं अहिंसा का, एक दूसरे के साथ सम्मान एवं गरिमा से पेश आने का महत्व दर्शाना होगा। उन्हें यह एहसास कराना होगा कि उनके आसपास जो लोग हैं, वे भौतिक सफलता की मंजिल तक पहुंचने के लिए सीढ़ियों की तरह इस्तेमाल किये जाने वाले शरीर भाव नहीं हैं।

यह काम आध्यात्मिक गुरुओं तथा राष्ट्राध्यक्षों के करने से नहीं होगा। हममें से हर एक को इसकी जिम्मेदारी लेनी होगी।

हिंदी दिवस का महत्व

- छत्रपाल सिंह राठौड़
(स्वरचित)

14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को भारत की राजभाषा का दर्जा आधिकारिक रूप से दिया गया था। तभी से देश में 14 सितम्बर का दिन हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है। हिंदी दिवस को भारत के स्कूलों, कॉलेजों तथा विभिन्न कार्यालयों में बड़ी धूमधाम से मनाया जाता है जिसमें विविध कार्यक्रमों एवं हिंदी से संबंधित स्पर्धाओं का आयोजन किया जाता है।

भारत में ज्यादातर लोग वार्तालाप करते समय हिन्दी भाषा को ही प्रधानता देते हैं। बचपन से ही हमें अपने घरों में हिन्दी भाषा का ज्ञान दिया जाता है। हिन्दी दुनिया में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है और हमें उसका सम्मान करना चाहिए। आज आर्थिक और तकनीकी विकास के साथ साथ हिन्दी भाषा अपने महत्व को खोती जा रही है। आज हर व्यक्ति सफलता पाने के लिए अंग्रेजी भाषा सीखना और बोलना चाहता है क्योंकि आज हर जगह अंग्रेजी भाषा की माँग है। लेकिन हमें अपनी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा को कभी नहीं भूलना चाहिए।

हिन्दी भाषा एवं राष्ट्र की प्रगति मात्र देश में प्रति वर्ष हिन्दी दिवस मनाने से संभव नहीं है बल्कि इसके लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम अपनी राष्ट्रभाषा को सम्मान दें और हमारी अगली पीढ़ी भी विदेशी भाषा के बजाय अपनी राष्ट्रभाषा को जाने। हिन्दी देश की धरोहर है एवं जिस तरह हम तिरंगे को सम्मान देते हैं, उसी तरह हमें अपनी राष्ट्रभाषा को भी सम्मान देना चाहिए। अपने देश की राष्ट्रभाषा का सम्मान करना हम नागरिकों का परम कर्तव्य है। हम सब की धार्मिक एवं क्षेत्रीय विभिन्नताओं के बीच एक हमारी राष्ट्रभाषा ही है जो एकता का आधार बनती है।

स्वच्छ भारत अभियान

- कविश राठौड
(स्वरचित)

राष्ट्रपिता महात्मा गांधीजी ने भारत की स्वतंत्रता से पहले कहा था स्वच्छता आजादी से अधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने भारत के नागरिकों को साफ-सफाई और स्वच्छता बनाए रखने के बारे में और इसे अपने दैनिक जीवन में शामिल करने पर बहुत जोर दिया था। भारत के राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने जून 2014 में संसद को संबोधित करते हुए कहा था “एक स्वच्छ भारत मिशन शुरू किया जाएगा जो देशभर में वेस्ट मैनेजमेंट और स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए होगा। यह महात्मा गांधीजी की 150 वी जयंती पर 2019 में हमारी तरफ से श्रद्धांजलि होगी। महात्मा गांधीजी के सपने को पूरा करने और दुनियाभर में भारत को एक आदर्श देश बनाने के क्रम में, भारत के प्रधानमंत्री ने महात्मा गांधीजी के जन्मदिन पर ‘स्वच्छ भारत अभियान’ नामक एक अभियान शुरू किया। इस अभियान के पूरा होने का लक्ष्य 2019 है जो कि महात्मा गांधीजी की 150 वी जयंती भी है।

इस अभियान के माध्यम में भारत सरकार वेस्ट मैनेजमेंट तकनीकों को बढ़ाते हुए स्वच्छता की समस्याओं का समाधान करेगी। स्वच्छ भारत अभियान पूरी तरह से देश की आर्थिक ताकत के साथ जुड़ा हुआ है। स्वच्छ भारत मिशन को शुरू करने के पीछे मूल लक्ष्य देशभर में शौचालय की सुविधा उपलब्ध करवाने के साथ ही दैनिक दिनचर्या में लोगों की सभी अस्वस्थ आदतों को समाप्त करना भी है। भारत में पहली बार सफाई अभियान की शुरुआत 25 सितंबर 2014 को हुई और इसकी शुरुआत श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा सड़क सफाई से की गई।

भारत के प्रधानमंत्री ने प्रत्येक भारतीय को 100 घंटे प्रति वर्ष समर्पित करने के लिए अनुरोध किया है जिसका यदि निष्ठापूर्वक पालन किया जाए तो 2019 तक इस देश को एक स्वच्छ देश बनाने के लिए पर्याप्त है।

- जितेंद्र कश्यप
(स्वरचित)

लम्हे

वक्त के फ़लक से टूटे हुए सितारे ।
बयां करते जो एहसास ज़िंदगी के सारे ॥
जोड़ के देखा इन सितारों को तो ।
नजर आया मुझे बीता लम्हा वो ॥
छोड़ आया था जिसे मैं ।
निकल आया खुद ज़िंदगी से बहुत आगे ॥
बचपन की वो मुस्कान, वो बेफिक्री ।
थी एक सितारे में छिपी, जो इस तरह से उभरी ॥
जवानी का जोश इस कदर था हमारे में ।
कुछ करने का जुनून झलक रहा था उस सितारे में ॥
उम्र के इस आखिरी पड़ाव पर पहुंचकर ।
इन सितारों को अपनी, आँखों में समेटकर ॥
हैं लगाए टकटकी बैठे उस फ़लक की ओर ।
टूटकर जहां से गिरे थे सितारे इस ज़मी की ओर ॥

गुजरता है वक्त आज भी मेरा तो....

बदल गयी किस्मत खुद ही की,
ज़िंदगी में मेरी, लम्हा वो जब आया तो ।
अकेला था मैं इस पराये जहां में,
बढ़ गया हौसला जब अपना तुझे पाया तो ।
थी जद्दोजहद अजीब मेरे मन में,
पर हो गई काफूर, दीदार जब तेरा हुआ तो ।
भाग रहा था डरकर जिस ज़िंदगी से,
बन गई वो मिसाल, पनाह में जब तेरी आया तो
हासिल न कर पाता तो मुकाम,
गर वक्त रहते तूने न सँभाला होता तो ।
बाकी न सिवा अब उन लम्हों के,
जिनमें गुजरता है वक्त आज भी मेरा तो ।

अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

- सालिमा लाज़र
(संकलित)

अन्तर्राष्ट्रीय मातृभाषा दिवस हर वर्ष 21 फरवरी को मनाया जाता है। बांग्लादेश के भाषा शहीद दिवस को 17 नवंबर, 1999 को यूनेस्कोने 'मातृभाषा दिवस' की मान्यता दी। बांग्लादेश में वर्ष 1952 से 21 फरवरी को 'भाषा आन्दोलन दिवस' के रूप में याद किया जाता है तथा इस दिन राष्ट्रीय अवकाश रहता है। इसकी एक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि है। 1948 में पाकिस्तान में उर्दु को राष्ट्रभाषा घोषित कर दिया गया। पूर्वी पाकिस्तान में इसकी जबरदस्त प्रतिक्रिया हुई। वहां बांग्ला को राजभाषा बनाने की मांग को लेकर आंदोलन छिड़ गया। आंदोलन की मांग थी कि बांग्ला भाषा को पाकिस्तान की एक आधिकारिक भाषा की मान्यता दी जाए तथा इसका उपयोग सरकारी कामकाज में, शिक्षा के माध्यम के रूप में, संचार माध्यमों में, मुद्रा तथा मुहर आदि पर जारी रखी जाए। इसके अलावा यह भी मांग थी कि बांग्ला भाषा को बांग्ला लिपि में ही लिखना जारी रखा जाए। ढाका विश्वविद्यालय के छात्रों ने राष्ट्रभाषा संग्राम परिषद का गठन कर 11 मार्च 1949 को 'बांग्ला राष्ट्रभाषा दिवस' मनाने का ऐलान कर दिया। तीन वर्ष में छात्रों का वह संघर्ष वृहद राजनीतिक आंदोलन में तब्दील हो गया। 21 फरवरी 1952 को ढाका में कानून सभा की बैठक होनी थी। उस सभा में भाग लेने वाले प्रतिनिधियों को ज्ञापन देने का फैसला भाषा आंदोलनकारियों ने किया। वे जैसे ही ढाका विश्वविद्यालय से निकलकर राजपथ पर आना शुरू हुए, पुलिस ने फायरिंग शुरू कर दी जिसमें आधिकारिक तौर पर चार लोग मारे गए। इस घटना के बाद पूर्वी पाकिस्तान के लोग हर वर्ष 21 फरवरी को 'भाषा शहीद दिवस' के रूप में मनाने लगे। यह दिन जीवन संग्राम की प्रेरणा का प्रतीक बन गया। यही आन्दोलन अन्ततः बांग्लादेश मुक्ति संग्राम में परिणित हो गया। वर्ष 1971 में इसी के चलते भारत और पाकिस्तान में युद्ध हुआ और पूर्वी पाकिस्तान आजाद होकर बांग्लादेश बना। इस आन्दोलन तथा इसके शहीदों की स्मृति में ढाका मेडिकल कॉलेज के निकट शहीद मीनार का निर्माण किया गया।

इस दिवस को मनाने का उद्देश्य है कि विश्व में भाषाई एवं सांस्कृतिक विविधता और बहुभाषिता को बढ़ावा मिले। मातृभाषा आदमी के संस्कारों की संवाहक है। मातृभाषा के बिना किसी भी देश की संस्कृति की कल्पना बेमानी है। मातृभाषा हमें राष्ट्रीयता से जोड़ती है और देशप्रेम की भावना उत्प्रेरित करती है। मातृभाषा आत्मा की आवाज है तथा देश को माला की लड़ियों की तरह पिरोती है। माँ के आंचल के पल्लवित हुई भाषा बालक के मानसिक विकास को शब्द व पहला सम्प्रेषण देती है। मातृभाषा ही सबसे पहले इंसान को सोचने-समझने और व्यवहार की अनौपचारिक शिक्षा और समझ देती है। बालक की प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में ही करानी चाहिए। अंग्रेजी के शिक्षण में भी विद्यार्थियों का अपनी राष्ट्रभाषा व मातृभाषा के प्रति आदर कम नहीं होना चाहिए। अधिकांश विकसित देशों में मातृभाषा ही प्राथमिक

से लेकर उच्च शिक्षा तक का माध्यम है। किन्तु ब्रिटेन और फ्रांस के उपनिवेश रहे देशों में अभी भी मातृभाषा के बजाय अंग्रेजी या फ्रेंच शिक्षा के माध्यम है।

अनेक देशों में वैज्ञानिक अध्ययन यह स्थापित कर चुके हैं कि मातृभाषा में सीखना प्रभावी सीखने का आधार होता है। आज 'सब के लिए शिक्षा' का लक्ष्य सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस लक्ष्य की प्राप्ति मातृभाषा के द्वारा ही संभव होगी। यूनेस्को द्वारा और अनेक देशों में हुए शोध से यह प्रमाणित है कि छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि, दूसरी भाषा की उपलब्धि, चिंतन की क्षमता, जानकारी को पचा कर समझ पाने की क्षमता, सृजनशक्ति और कल्पनाशीलता इनसे उपजाने वाला और अपनी सामर्थ्य का बोध मातृभाषा के माध्यम से ही उपजता है। कुल मिलाकर मातृभाषा के माध्यम से सीखने का बौद्धिक विकास पर बहुआयामी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मातृभाषा को आरंभिक शिक्षा का माध्यम न बनाना एक गंभीर सामाजिक और सांस्कृतिक चुनौती है जिसकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

इसमें कोई शक नहीं कि भारत प्रगति के पथ पर अग्रसर है। पर यह भी सच है कि इस प्रगति का लाभ देश की आम जनता तक पूरी तरह पहुँच नहीं पा रहा है। इसके कारणों की तरफ जब हम दृष्टि डालते हैं तो पाते हैं कि शासन को जनता तक उसकी भाषा में पहुँचाने में अभी तक हम कामयाब नहीं हुए हैं। यह एक प्रमुख कारण है। जब तक इस काम में तेजी नहीं आती तब तक किसी भी क्षेत्र में देश की बड़ी से बड़ी उपलब्धि और प्रगति का कोई मूल्य नहीं रह जाता। अन्तर्राष्ट्रीय मानचित्र पर अंग्रेजी के प्रभाव को नकारा नहीं जा सकता। हम यह भूल जाते हैं कि मातृभाषा किसी भी विषय को सीखने का आधार होती है और उसके माध्यम से विचारों, संप्रत्ययों (कांसेप्ट) आदि को सीखना आसान होता है। ऐसा न कर हम शिशुओं का समय, विषय को छोड़ कर एक अन्य (विदेशी!) भाषा को सीखने में लगा देते हैं और उसके माध्यम से विषय को सीखना केवल अनुवाद की मानसिकता को ही बल देता है। साथ ही हर भाषा किसी न किसी संस्कृति और मूल्य व्यवस्था की वाहिका होती है। हम मातृभाषा को भुलाकर अपने आचरण और मूल्य व्यवस्था को भी बदलने का प्रयास करते हैं और इसी क्रम में अपनी सांस्कृतिक धरोहर को भी विस्मृत करते जा रहे हैं।

हुंकार

- प्रदीप कुमार मधेशिया
(स्वरचित)

हुंकार भर दो योद्धाओं,
रणक्षेत्र में जाने के लिए,
क्या पता फिर मौका कब मिले,
करतब अपना दिखाने के लिए ।
कदम बढ़ाओ अदम्य साहस से,
विजय शत्रु पर पाने के लिए,
सच्चा योद्धा नहीं कभी सोचता,
पीछे हट जाने के लिए ।
हुंकार भर दो योद्धाओं,
रणक्षेत्र में जाने के लिए ।
बढ़ते जाओ आगे अनवरत,
ध्वज जीत का फहराने के लिए,
क्या पता फिर मौका कब मिले,
कर्तव्यनिष्ठा अपनी दिखाने के लिए ।
हुंकार भर दो योद्धाओं,
रणक्षेत्र में जाने के लिए ।
टूट पड़ो शत्रु पर योद्धाओं,
मर्यादा मातृभूमि की बचाने के लिए,

क्या पता फिर मौका कब मिले,
स्वाभिमान अपना दिखाने के लिए ।
हुंकार भर दो योद्धाओं,
रणक्षेत्र में जाने के लिए ।
बढ़ते जाओ आगे योद्धाओं,
मातृभूमि पर बलि बलि जाने के लिए,
क्या पता फिर मौका कब मिले,
पराक्रम और शौर्य दिखाने के लिए ।
हुंकार भर दो योद्धाओं,
रणक्षेत्र में जाने के लिए ।
हैं वो खुशनसीब जो पाते हैं मौके,
प्राण राष्ट्र पर न्योछावर कर जाने के लिए,
आगे बढ़ते जाते हैं सच्चे योद्धा,
राष्ट्र पर बलि बलि जाने के लिए ।
हुंकार भर दो योद्धाओं,
रणक्षेत्र में जाने के लिए ।
क्या पता फिर मौका कब मिले,
करतब अपना दिखाने के लिए ।

- प्रदीप कुमार मधेशिया
(स्वरचित)

ऐसा लगा पीछे है कोई,
यह सोच मैं जागी ना सोई,
कौन आयेगा सपनों में,
जब रहे ना अपनों में ।
वो लम्हें बड़े थे दिलकशदार,
जो हमने संग बिताये थे,
झील के उस पार,
अब बस एक ख्वाब सा रह गया है,
जो कभी हमने देखे थे सच में ।
कैसे बताऊँ कितनी भयावह थी वो रात,
जब आई थी चुपके से वो कयामत की रात,
कर गई हमें जुदा वो कयामत की रात,
अब ना होगी कभी फिर अपनी मुलाकात,
रह गई बस अपनी यादों की बारात,
फिर भी लगता है मानो आ रहा है कोई
इसी इन्तजार में जागी ना सोई ।

- अर्चित्य सिंह बघेला
कक्षा 10 (स्वरचित)

पक्षियों की चहचहाहट और पत्थरों के लुढ़कने की गहरी आवाजों के बीच, वह पड़ी रही। अंधकार। वह स्थिर थी, जितनी वह रह सकती थी। सिर्फ उसकी रगों में दौड़ता खून और आसपास के छोटे-बड़े कंकर-पत्थर ही हिल रहे थे। जरा भी हिले बिना, वह बेहद सावधानी से सांस ले रही थी। वह दो दिनों से सोई नहीं थी, फिर भी अपनी पलकों को झपकने नहीं दे रही थी। वह एक धातु से बने गोले को टकटकी आँखों से देख रही थी। उसको आसपास के दृश्यों के बारे में कुछ भी ज्ञात न था। इस समय, उसे सिर्फ वह गोला और उसके पास तमाम कंकर-पत्थर दिखाई दे रहे थे। उसका हृदय जोर-जोर से धड़क रहा था, लग रहा था कि वह सीने के बाहर आना चाहता है। उसे ऐसा लगा कि मानो उसका हृदय अपने ही स्थान में बंधा है। वक्त अभी इतना धीमा नहीं लगा।

सूकी ढेर सारे पत्थरों के नीचे दबी हुई थी। उसे ऐसा लग रहा था कि उसका जीवन एक ठहराव पर आ रुका है। उसे ऐसा लग रहा था कि केवल कुछ ही पल पहले वह मीसू और अपनी माँ के साथ रात्रि का भोजन कर रही थी। वह अभी भी अपनी छोटी बहन को हर पल खिखियाते और माँ को नए बावर्ची को और उसके पकवान को कोसते सुन सकती थी। सूकी इन ख्यालों में डूबी हुई थी कि अचानक पत्थर का एक विशाल गोला उस गड्ढे में जोर से आ गिरा। इससे वह गोला जरा सा हिला, परंतु सूकी की आत्मा को एक जबरदस्त धक्का लगा। कई घंटों तक पत्थर गिरते रहे। अब बहुत सारे छोटे-छोटे पत्थर उस गोले के नीचे आ कर रुक चुके थे और इसलिए अब वह गोला भी स्थिर लग रहा था। सूकी को यह एक ईश्वर का वरदान लगा और इस सुनहरे अवसर का सदुपयोग करने के लिए उसने उन कुचलते हुए पत्थरों से बाहर निकलने का निश्चय किया।

देर तक रेंगने के पश्चात वह उन कष्टदायी चट्टानों के नीचे से बाहर आ गयी, परन्तु प्रसन्नता केवल दो पलों की ही थी। जब उसने उस गड्ढे के बाहर कदम रखा, तो उसे अपनी आँखों पर यकीन नहीं हुआ। जहाँ तक भी उसकी दृष्टि जा सकती, सब कुछ तबाह ही नजर आ रहा था। कहीं भी नजर घुमाने पर सिर्फ एक ही दृश्य नजर आ रहा था। अवशेष। सभी छोटे-बड़े घर, खेत जलाकर राख कर दिए गये थे। चारों ओर केवल धूल और चट्टानों के अवशेष ही दिखाई दे रहे थे। सूरज की किरणें बड़ी मुश्किल से इस अंधकार भरी जगह को प्रकाशित कर रही थी।

सूकी का गला बुरी तरह से सूख रहा था। उसकी माँ हमेशा कहती थी कि दुनिया के हर कोने में कहीं पर एक इन्द्रधनुष छुपा हुआ है, परन्तु सूकी की आँखों को चारों ओर सिर्फ अन्धकार ही नजर आ रहा था। उसने थोड़ा चलने की कोशिश की तो उसे उसके शरीर पर पड़े हुए तमाम जख्मों का पता चला। उसके पैरों में कई सारे छोटे-छोटे लकड़ी के टुकड़े घुस गए थे और वहाँ से निकला खून भी सूख चूका था। उसके पेट और पीठ पर अनगिनत खरोंचे थे। गले की एक नस से भी धीरे धीरे खून बह रहा था। उसने जब अपना कदम आगे बढ़ाया तो उसके पैर का सूखा खून विद्रोह करने लगा। दर्द के मारे वह जोर से धरती पर बैठ गयी। उसका पूरा बदन दुख रहा था, लेकिन उसकी आत्मा को चैन न था। वह अपनी पूरी शक्ति लगाकर खड़ी हुई और भारी सांसे लेते हुए आगे बढ़ने का प्रयास करने लगी। परंतु कुछ दूरी चलने के पश्चात उसके पैरों ने हार मन ली और वह धड़ाम से गिर पड़ी।

मन भी हमारे शरीर का एक बहुत ही नटखट अंग है। अभी भी उसे सूकी के साथ खेल खेलना है। इस कारण उसे सब कुछ दुगुना दिखाई दे रहा था, सुनाई दे रहा था तो सिर्फ एक धीमी गहरी भनभनाहट। रोशनी कभी तेज हो रही थी और कभी मंद। उसका सिर बुरी तरह से चकरा रहा था और उसने उलटी कर दी। अचानक ही उसने अपनी आंखें चौड़ी कर ली। “मीसू!” वह धीरे से उठी और अपनी बहन व अपनी माँ को पुकारने लगी। परंतु उसकी आवाज बहुत ही हलकी, कमजोर और क्षीण थी। उसे बोलने के लिए भी जोर लगाना पड़ रहा था। लेकिन वह हिम्मत जुटाकर चिल्लाई, “मीसू!” से लगा कि उसकी पुकार अवशेषों और अन्धकार के बीच धुल गई, लेकिन तभी किसी दुसरे गड्ढे में से एक हलकी सी आवाज आई, सूकी ?

सूकी मीसू की आवाज सुनकर फूली न समाई। परंतु वह एहसास हर्ष से बढ़कर था। निडरता। वह मीसू की आवाज की ओर जल्दी कदम बढ़ाने लगी। उसने मीसू को एक दूसरे गड्ढे में पाया जहाँ वह बिलकुल सूकी की तरह पड़ी हुई थी, एकदम स्थिर, चट्टानों के नीचे दबी हुई। उस गड्ढे में भी एक गोला था, किन्तु यह गोला सूकी के गड्ढे वाले गोले से कहीं ज्यादा छोटा था। कंकर-पत्थर लगातार नीचे गिरते रहे। मीसू के आँखों में से आँसुओं की नदी बहे जा रही थी। सूकी धीरे से झुकी और अपनी बहन को निकालने के लिए नीचे उतरने लगी लेकिन वह उस छोटी सी ढलान पर फिसल गई। वह पीठ के बल गिर गयी, परन्तु अभी उसके सारे दर्द मानो हवा हो गए थे। अभी उसे यदि कुछ महसूस हो रहा था तो वो थी मीसू की धीमी सांसे, जो वक्त के साथ हल्की और कमजोर होती जा रही थी। उसे उन चट्टानों के नीचे से निकालना आवश्यक था। सूकी ने सारी हिम्मत व ताकत इकट्ठा करके उन पत्थरों को हटाने का प्रयास शुरू किया परंतु उसकी कोशिश के बावजूद भी वह उन पत्थरों को टस से मस ना कर सकी। अब उसका बदन बुरी तरह से टूटने लगा और उसका गला सूखेपन के कारण सिकुड़ने लगा। पसीने के अनगिनत बूंदें उसके पूरे देह पर बह रही थी। हाँफते हुए उसने धीमी आवाज में पूछा, मीसू ? तू ठीक है ? वह अपनी बहन को बचाने के लिए नीचे झुकी परंतु स्पर्श करते ही उसको एहसास हुआ कि मीसू का बदन बिलकुल ठंडा था।

सूकी के अन्तः मन में दुःख और क्रोध का एक मिश्रित तूफान उत्पन्न हुआ। आँसू बिना रुके उसके नेत्रों के बाहर आ रहे थे। वह उस गड्ढे के बाहर आ गयी। उसे इस अंधेरे में यदि कुछ दिखाई दे भी रहा था तो वह था धूल और बर्बादी। शांत रातें जल कर राख हो चुकी थी। उसकी एक मात्र खुशी को उस तबाही की ज्वाला ने पिघला दिया था। सूकी को कुछ समय बाद एहसास हुआ कि इस धूल और अन्धकार के बीच असीम दूरी तक अनगिनत गोलों की अनेक चमकीली रोशनी चमचमा रही थी। टूटी ईमारतें, उड़ती धूल और भय से ढका गगन उस मासूम से वह सत्य न छुपा सके। सूकी को एहसास हुआ कि जो सब उसका होना चाहिए वह अब उसके काबू में नहीं है। उसकी जान उन विध्वंसों के हाथों में थी जिन्हे सिर्फ आग का उपयोग कर विनाश करना आता है। उसकी जान अब उनके हाथों में थी जिनका मानना था कि यदि इस दुनिया को प्रज्ज्वलित करना हो तो उसे पहले आग लगानी होगी।

उसने धीरे-धीरे आगे बढ़ना शुरू किया। नजर उठाई तो सामने एक सफेद रोशनी का एक छोटा सा धब्बा दिखा। उसे पता नहीं चला पर उसकी गति उस धब्बे को देखकर तेज हो गयी। उसके हृदय में एक अनोखी सी उमंग जाग उठी थी। उसकी दृष्टि कभी इतनी साफ न थी। इतने धूल और अन्धकार में भी उसे वह रोशनी दिखाई दे रही थी। वह बिना पलक झपकाए, बिना रुके आगे बढ़ती रही। अपने पैरों को घसीटते हुए, चट्टानों के अवशेषों के बीच से वह अपना रास्ता बनाते हुए सफेद रोशनी की ओर बढ़ती रही। बढ़ती रही। जैसे-जैसे सूकी रोशनी के करीब आती गयी, वह धब्बा और अधिक बड़ा व चमकीला होता गया। उसके अन्दर ताकत और साहस की नदी जोरों से बहने लगी। उसे आखिरकार ऐसा लगा कि अब जाकर उसकी यात्रा का अंत आ गया। और करीब जाने पर अन्धकार जैसे उस रोशनी में धुलने लगा था। उसने रोशनी में समा जाने के लिए अपना हाथ आगे बढ़ाया ही था कि अचानक उसने एक बहुत तेज आवाज सुनी। और सब फिर से अंधेरा हो गया।

स्थानांतरण मूल्य निर्धारण

- ए. मजूमदार एवं मुकेश जांगिड़
(संकलित)

परिचय (Introduction)

भारत में आर्थिक गतिविधियों में बहुराष्ट्रीय समूहों की बढ़ती भागीदारी के कारण एक ही समूह से संबंधित दो या दो से अधिक उद्यमों के बीच दर्ज लेनदेन से नए और जटिल मुद्दे उत्पन्न हुए। इसलिए, उन बहुराष्ट्रीय उद्यमों के मामले में भारत में उचित, निष्पक्ष और न्यायसंगत लाभ और कर का निर्धारण करने के लिए एक समान और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार किए जाने के तंत्र को पेश करने की आवश्यकता थी। तदनुसार, वित्त अधिनियम, 2001 ने भारतीय आयकर अधिनियम 1961 की धारा 92-ए से 92-एफ के जरिए भारत में अंतरण मूल्य का कानून पेश हुआ, जो स्थानांतरण मूल्य की गणना करता है और विस्तृत दस्तावेजीकरण प्रक्रियाओं का सुझाव देता है।

क्षेत्र और प्रयोज्यता (Scope & Applicability)

स्थानांतरण मूल्य निर्धारण विनियम (Transfer Pricing Regulations) उन सभी उद्यमों के लिए लागू होते हैं जो संबंधित उद्यम के साथ अंतरराष्ट्रीय लेन-देन में प्रवेश करते हैं। इसलिए, आम तौर पर यह संबद्ध उद्यमों (Associate Enterprises) के बीच दर्ज किए गए सभी सीमा पार लेनदेन (International Transactions) पर लागू होता है। इसका उद्देश्य किसी भी असंबंधित पार्टी (Unrelated party) की खुले बाजार की स्थितियों में उपलब्ध तुलनात्मक कीमत पर पहुंचना है जिसे असन्निकट कीमत (Arm's length price) रूप में जाना जाता है।

स्थानांतरण मूल्य निर्धारण (Transfer Pricing)

स्थानांतरण मूल्य निर्धारण सामान्यतः संबंधित उद्यमों (Associated Enterprises) के बीच के लेनदेन की कीमतों को संदर्भित करता है जो स्वतंत्र उद्यमों (Independent Enterprises) के बीच होने वाले लेनदेन की शर्तों से भिन्न हो सकता है। यह संबंधित संस्थाओं (Related Entities) के बीच माल, सेवाओं और प्रौद्योगिकी के हस्तांतरण से जुड़े मूल्य को संदर्भित करता है। यह असंबंधित पार्टियों (Unrelated Parties) जो एक आम इकाई (Common Entity) द्वारा नियंत्रित किये जा रहे हैं के बीच जुड़े मूल्य को भी संदर्भित करता है। उदाहरण के लिए एक कम्पनी 'अ' किसी वस्तु को 100 रुपये में खरीदती है और इसे किसी दूसरे देश में इससे संबंधित कम्पनी (Associated Company) 'ब' को 200 रुपये में बेचती है जो कि वह खुले बाजार में 400 रुपये में बेचती। अगर 'अ' ने इसे सीधे बेचा होता तो 300 रुपये का मुनाफा होता। लेकिन 'ब' के माध्यम से अनुमार्गित करके, यह इसे 100 रुपये तक सीमित कर देती है, शेष लाभ राशि का अंतरण "ब" अपने लेखा में करती है। 'अ' और 'ब' के बीच लेनदेन परस्पर हित से नियंत्रित होता है न कि बाजार बलों द्वारा। इस तरह 200 रुपये का लाभ 'ब' के देश में स्थानांतरित कर दिया गया है। वस्तु को एक कीमत (स्थानांतरण कीमत) पर अंतरित किया जाता है, जो मनमानी या निर्धारित (200 सौ रुपये) है, लेकिन न कि बाजार कीमत (रुपये 400)।

अंतरराष्ट्रीय लेनदेन (International Transaction)

भारतीय आयकर अधिनियम 1961 की धारा 92-ख में अंतरराष्ट्रीय लेनदेन को परिभाषित किया गया है। अंतरराष्ट्रीय लेनदेन से तात्पर्य ऐसे लेन-देन से है जो कि दो या अधिक संबंधित उद्यमों (जिनमें से कोई एक या दोनों अनिवासी

हैं) के बीच मूल या अमूल संपत्ति की बिक्री, या सेवाओं के प्रावधान, या उधार या उधार राशि, या कोई भी अन्य लेनदेन जो कि ऐसे उद्यमों के लाभ, आय, हानियों या परिसंपत्तियों पर प्रभाव रखता है।

संबंधित उद्यम (Associated Enterprises)

भारतीय आयकर अधिनियम 1961 की धारा 92-क के अनुसार संबंधित उद्यम से तात्पर्य ऐसे उद्यम से है - (क) जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से या किसी एक या एक से अधिक बिचौलियों के माध्यम से अन्य उद्यम के प्रबंधन या नियंत्रण या पूंजी में भाग लेता है। (ख) जिसके संबंध में एक या एक से अधिक व्यक्ति जो प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से या एक या अधिक बिचौलियों के माध्यम से इसके प्रबंधन या नियंत्रण या पूंजी में भाग लेते हैं, वही समान व्यक्ति प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से या एक या अधिक बिचौलियों के माध्यम से अन्य उद्यम के प्रबंधन या नियंत्रण या पूंजी में भाग लेते हैं।

असन्निकट कीमत (Arm's length price)

'असन्निकट कीमत' से वह कीमत अभिप्रेत है जो अनियंत्रित दशाओं में सहयुक्त उद्यमों से भिन्न व्यक्तियों के बीच किसी संव्यवहार में लागू की जाती है या लागू किए जाने के लिए प्रस्थापित की जाती है।

असन्निकट कीमत की संगणना

भारतीय आयकर अधिनियम 1961 की धारा 92 (ग) के अनुसार किसी भी अंतरराष्ट्रीय लेन-देन के संबंध में असन्निकट कीमत का अवधारण निम्नलिखित पद्धतियों में से किसी एक के द्वारा किया जाएगा जो लेन-देन की प्रकृति या लेन-देन के वर्ग या संबंधित व्यक्तियों के वर्ग या ऐसे व्यक्तियों द्वारा किए जाने वाले कृत्यों को अथवा ऐसी अन्य सुसंगत बातों को, जो बोर्ड इस निमित्त विनिर्दिष्ट करे ध्यान में रखते हुए सर्वाधिक समुचित पद्धति है अर्थात्-

- (क) तुलनीय अनियंत्रित कीमत पद्धति
- (ख) पुनर्विक्रय कीमत पद्धति
- (ग) लागत जमा पद्धति
- (घ) लाभ विभाजन पद्धति
- (इ) संव्यवहारात्मक शुद्ध अंतर पद्धति
- (च) ऐसी अन्य पद्धति जो बोर्ड द्वारा विहित की जाए।

प्रभाव :

स्थानांतरण मूल्य का प्रभाव यह है कि मूल कंपनी या एक विशिष्ट सहायक कंपनी अपर्याप्त कर योग्य आय या लेनदेन पर अत्यधिक नुकसान का उत्पादन करती है। उदाहरण के लिए, उच्च कर देशों में अधिवासित सहायक कंपनियों से मुनाफा कम करने के लिए उच्च हस्तांतरण की कीमतों को बढ़ाकर मूल कंपनी को प्राप्त मुनाफा बढ़ाया जा सकता है। कम कर अधिकार क्षेत्र में स्थित सहायक कंपनियों को कम अंतरण मूल्य निर्धारित करके मूल कंपनी को प्राप्त मुनाफे को स्थानांतरित किया जा सकता है। इसके एक उदाहरण के रूप में एक ऐसा समूह जो उच्च कर वाले देशों में उत्पादों का निर्माण करता है, एक कर हेवन देश (Tax Heaven Country) में स्थिति अपनी सहबद्ध बिक्री कंपनी को कम लाभ में उत्पादों को बेचने का निर्णय ले सकता है। वह कंपनी बदले में एक असन्निकट कीमत (Arm's Length Price) पर उत्पाद बेचती है और जिसके परिणाम स्वरूप वर्धित (Inflated) लाभ उस देश में कम या शून्य कर के अधीन होगा। परिणामतः राजस्व की हानि और विदेशी मुद्रा भंडार का निकास होगा।



दिनांक : 14-9-2017 के उद्घाटन समारोह के मुख्य अतिथि महोदय
 2015 के ज्ञानपीठ अवार्डी डॉ. रघुवीर चौधरी के साथ (मध्य)
 महालेखाकार महोदया (दायें से तीसरे), गुप ओफिसर्स एवं हिन्दी अनुभाग के सदस्य



भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक श्री शशिकान्त शर्मा जी के कार्यालय आगमन पर
 उनके साथ प्रधान महालेखाकार महोदय (भूतपूर्व) और प्रधान निदेशक महोदय (भूतपूर्व)

आरोहण

वर्ष : 2016-17



ऑडिट भवन, अहमदाबाद

कार्यालय महालेखाकार (आर्थिक एवं राजस्व क्षेत्र लेखापरीक्षा) गुजरात, अहमदाबाद
तथा

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केन्द्रीय) गुजरात, अहमदाबाद

ऑडिट भवन, नजदीक ईश्वर भवन, नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380 009.